सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2011 वर्ष 10 अंक 06

माहे मुबारक

आ गया माहे मुबारक आ गया
रहमतों को साथ लेकर आ गया
सहरी खाओ रोजा रखो भाइयो
नेकियाँ दिन भर कमाओ भाइयो
स्वाद इफ्तारी का तो कहना ही क्या
साल भर मिलता नहीं ऐसा मजा
फिर तरावीह में सुनो रब का कलाम
बीस रकअत हम तो पढ़ते हैं मुदाम
रोग में तो आठ पढ़ लेते हैं हम
ऐसे बन्दों पर खुदा का है करम
खूब दुआएं करते हैं हम सुब्ह शाम
भेजते प्यारे नबी पर हैं सलाम

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
माहे मुबारक	डॉ हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	7
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	10
दुरूद और सलाम	माहिरुल क़ादिरी	11
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	12
नमाज़े तरावीह	इदारा	14
ज़कात, फित्रा और एअतीकाफ	इदारा	16
रमज़ान के रोज़े के ज़रूरी मसाइल	इदारा	18
मुस्लिम समाज	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	20
सुन्नते रसूल सल्ल0 और हमारी ज़िन्दगी	मौलाना मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी	21
अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	22
15 अगस्त 1947	इदारा	27
स्वतंत्रता गान	मौलाना मुहम्मद सानी हसनी नदवी	28
कादियानियों के नये अवतार से सावधान	इदारा	29
क़ियामत करीब है	ए0 जे0 खान	30
निक़ाब	इदारा	32
कुछ वृतांन्त आपके सेवक का	इदारा	35
ईमान वाले परस्पर भाई हैं	इदारा	37
अहले ख़ैर हजरात से अपील	इदारा	38
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 म्ईद अशरफ नदवी	39

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर—ए—बक़रह

अनुवाद : और जब लिया हमने तुमसे इक़रार और बुलन्द किया तुम पर कोहे तूर को कि पकड़ो, जो किताब हमने तुमको दी ज़ोर से, और याद रखो जो कुछ उसमें है ताकि तुम डरो[1(63)], फिर तुम फिर गए उसके बाद, अतः यदि न होती अल्लाह की कृपा तुम पर और उसकी मेहरबानी तो ज़रूर तुम तबाह होते[2(64)] और तुम खूब जान चुके हो उन्हें, जिन्होंने तुमसे ज़्यादती की थी, हफ़्ते के दिन में, तो हमने कहा उनसे हो जाओ ज़लील बन्दर[3(65)] फिर किया हमने उस वाक्ये को इबरत उन लोगों के लिये, जो वहां थे और जो पीछे आने वाले थे और नसीहत डरने वालों के वास्ते है[4(66)]।

तफ़्सीर (व्याख्या)

1. कहते हैं कि तौरेत नाज़िल हुई तो बनी इस्राईल शरारत से कहने लगे कि "तौरेत के आदेश तो कठिन और भारी हैं, हमसे नहीं हो सकते"। तब अल्लाह ने एक पहाड़ को आदेश दिया कि जो उन सबके सरों पर आकर उतरने लगा और सामने आग पैदा हुई। अतः अवज्ञा की गुन्जाइश न रही इसलिए विवश होकर तौरेत के आदेशों को स्वीकार कर लिया। शेष ये संशय कि पहाड़ को सरों पर लटका कर उसके आदेशों को स्वीकार कराना तौरेत की ये तो खुली हुई जोर जबरदस्ती है जो आयत "लाइक़राह फिद्दीन" (दीन में कोई जबरदस्ती नहीं) और इसके अतिरिक्त कष्ट के सिद्धान्त के एकदम विरुद्ध है क्योंकि कष्ट का आधार तो इख्तियार पर है और इक़राह मनाकिज़े इख्तियार है"। तो उसका जवाब हुआ कि इकराह (जबरदस्ती) धर्म में स्वीकार नहीं। धर्म तो बनीइस्राईल पहले से ही स्वीकार किये हुए थे और बार—बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से तक़ाज़ा करते थे कि "कोई किताब जिसमें शरीअत के हुक्म हों लाकर दो ताकि अमल करें" और इस पर वह वादा कर चुके थे। जब तौरेत उनको दी गई तो अवज्ञा और अवहेलना पर अड़ गए, तो अब पहाड़ का लटकाना वादा खिलाफी से रोकने के लिये था न कि धर्म को स्वीकार करने के लिये।

2. अर्थात वादा करके फिर गये। अतः यदि अल्लाह की कृपा न होती तो बिल्कुल तबाह हो जाते अर्थात उसी वक्त हलाक कर दिये जाते या ये कि तौबा भी करते और अन्तिम सन्देष्टा (नबी) की पैरवी भी करते तो भी तुम्हारे पाप क्षमायोग्य न होते।

3. बनी इस्राईल को तौरेत में आदेश हुआ था कि "शनिवार का दिन केवल इबादत के लिये है उस दिन मछली का शिकार मत करो"। वह लोग फरेब और धोखे से शनिवार के दिन शिक़ार करने लगे तो अल्लाह ने उनके रूप भ्रष्ट (मसख़) करके उनकी सूरत बन्दर के जैसी कर दी। बुद्धि व समझ और संवेदना मनुष्य की उनमें शेष थी। तीन दिन के बाद सब मर गए और ये घटना हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुई। विस्तार पूर्वक सूर—ए—ऐराफ में आएगा।

4. अर्थात इस घटना को हमने भय और शिक्षा (इबरत) का कारण बना दिया, अगले और पिछले लोगों के लिए" अर्थात जिन्होंने इस अज़ाब को देखा और जो आगे पैदा होंगे" या जो बस्तियाँ शहर के आगे और उसके पीछे आबाद थीं।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मय्यत के अहकाम

—अमतुल्लाह तस्नीम

हुज़ूर सल्ल0 का मर्ज़-ए-वफात

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ि0 बिन अबूतालिब आप सल्ल0 के पास से मर्जुलमौत (मौत की बीमारी) के ज़माने में निकले। लोगों ने कहा ऐ अबुलहसन! आप सल्ल0 कैसे हैं? कहा अल्लाह का शुक्र है, पहले से बेहतर हैं।

(बुखारी)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 के आख़िरी वक़्त में उनके पास एक प्याला रखा था, मैं देख रही थी कि आप बराबर उसमें हाथ डालते थे और अपने चेहरे पर फेर लेते थे और कहते कि "ऐ अल्लाह मौत की सख्ती और बेहोशी में मेरी मदद कर।

(तिर्मिज़ी)

जिसका वक़्त क़रीब हो उसके करीबियों को उसकी ख़तिरदारी की हिदायत

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि0 से रिवायत है कि जुहैना क़बीले की एक औरत आप सल्ल0 के पास आई और कहा कि मुझसे ऐसी हरकत हो गई है कि जिसके कारण मैं दण्ड की पात्र बन गई हूँ, बस आप मुझे सज़ा दीजिए। आप सल्ल0 ने उसके अभिभावक को बुलाकर कहा कि उसके साथ अच्छा व्यवहार करो और जब बच्चा पैदा हो जाए तो फिर मेरे पास लाना। उन्होंने ऐसा ही किया। उसके बाद जब वह औरत आई तो आप सल्ल0 के हुक्म से उसको उसी के कपड़ों से बाँध दिया गया। फिर आप सल्ल0 ने संगसार (पत्थर मारने) का हुक्म दिया और वह संगसार की गई। फिर आपने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी।

(मुस्लिम)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि मैं आप सल्ल0 के पास आया। आप सल्ल0 को बुखार चढ़ा हुआ था। मैंने आपके बदन को हाथ लगाकर कहा कि आपको तो बहुत तेज़ बुखार है। आप सल्ल0 ने कहा कि हाँ! मुझे दो आदमियों के बराबर बुखार है। (बुखारी)

हज़रत साद बिन वक्कास रज़ि0 से रिवायत है कि मेरे पास आप सल्ल0 अयादत के लिए आए। मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप मेरी तकलीफ देख रहे हैं! मैं सम्पत्ति वाला हूँ और मेरी वारिस मेरी एक बेटी है।

हज़रत कासिम बिन मुहम्मद रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत आइशा रज़ि0 ने कहा हाय सर का दर्द! आप सल्ल0 ने कहा कि मेरे सर में दर्द है और पूरी हदीस[1] बयान की।

मरने वाले को तल्कीन

हज़रत मआज रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जिसका कल्मा[2] "लाइलाह इल्लल्लाहु"

---

1. हज़रत आइशा रज़ि0 ने हाय "दर्दे सर" कहा तो आप सल्ल0 ने कहा अगर तुम्हारा इन्तेकाल हो जाए तो तुम्हें अच्छी तरह कफनाऊँगा तो हज़रत आइशा रज़ि0 ने कहा तब तो आप उस दिन नई शादी करेंगे तो इस पर आप सल्ल0 ने कहा कि मेरे सर में दर्द है।
2. यानि मौत के वक्त।

होगा वह जन्नत में जाएगा। (अबूदाऊद)

हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फरमाया कि अपने मुर्दों को "लाइलाह इल्लल्लाहु" की तल्कीन[3] करो।

(मुस्लिम)

मरने वाले के लिए दुआ

उम्मुलमुमेनीन हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि0 से रिवायत है कि नज़अ् (मरणासन्न दशा) के वक्त अबूसल्मा रज़ि0 की आँखें पथरा गई थीं। आप सल्ल0 तश्रीफ लाए और उनकी आँखें बन्द कर दीं। फिर कहा कि जब रूह कब्ज़ होने लगती है तो आँखें उसको टकटकी बाँध कर देखने लगती हैं। ये सुनकर उनके घर वाले चींख उठे। आप सल्ल0 ने कहा कि अपनी भलाई के लिए दुआ करो। तुम्हारे हर बोल पर फरिश्ते "आमीन" कहते हैं। फिर दुआ की कि अल्लाह! अबूसल्मा को बख्श दे और उनका दर्जा हिदायत पाने वालों में बुलन्द फरमा और किसी को उनका स्थानापन्न बना और हमको और उनको बख्श दे, उनकी कब्र को विस्तृत और रौशन कर दे। (मुस्लिम)

मरीज़ और मय्यत के पास अच्छी बात कहो

उम्मुलमुमेनीन हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने कहा कि जब किसी बीमार या मय्यत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो, इसलिए कि तुम्हारे हर बोल पर फरिश्ते "आमीन" कहते हैं। हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि0 कहती हैं कि जब अबूसल्मा रज़ि0 का देहान्त हुआ तो मैं आप सल्ल0 के पास आई और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! अबूसल्मा रज़ि0 का इन्तेक़ाल हो गया। आप सल्ल0 ने फरमाया कि कहो ऐ अल्लाह! मुझे और उनको बख्श दे और मेरे लिए उनसे बेहतर अभिभावक बना। तो मैंने आप सल्ल0 के हुक्म की तामील की। फिर अल्लाह ने मेरा अभिभावक उनको बनाया जो मेरे लिए उनसे बेहतर थे (यानि आप सल्ल0)। (अबूदाऊद)

खुदा से सवाब और उसके अच्छे बदल की दुआ

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से कहते हुए सुना है कि जिसको कोई मुसीबत पहुँचे तो ये कहे "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअुन, अल्लाहुम्म अजिर्नी फी मुसीबती वख्लुफ ली खैरम्मिन्हा"। अनुवादः हम अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ पलटने वाले हैं, ऐ अल्लाह! मुझे मेरी मुसीबत पर सवाब दे और मुझे बेहतर बदला दे।

तो अल्लाह इस मुसीबत पर सवाब देगा और बेहतर बदल देगा। वह कहती हैं कि जब अबूसल्मा रज़ि0 की वफात (मृत्यू) हुई तो मैंने आप सल्ल0 के आदेशानुसार यही कहे तो अल्लाह ने उससे बेहतर बदला दिया कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को मेरा अभिभावक बनाया। (मुस्लिम)

❖❖❖

3. कल्मा को इस तरह पढ़ना चाहिए कि बीमार सुने और सुनकर वैसा ही खुद भी पढ़ने लगे यही तल्कीन है।

माहे मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में कहा है कि "ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जैसे तुम से पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था ताकि तुम मुत्तकी (संयमी) बन जाओ। (2:183)

दूसरी जगह बताया कि "रमज़ान का महीना वह महीना है जिसमें लोगों को सत्य मार्ग दिखाने के लिए यह पवित्र कुर्आन उतारा गया, इसमें सत्य मार्ग दर्शन तथा सत्य, असत्य के अंतर के प्रमाण हैं। जो व्यक्ति इस महीने को पाए इसमें रोज़े रखे, परन्तु जो रोगी हो या सफर पर हो (और रोज़ा रखने में उसको कठिनाई हो) वह दूसरे दिनों में (छूटे रोज़े की) गिन्ती पूरी करले। अल्लाह तआला तुम्हारे लिये सरलता चाहता है, कठिनाई नहीं चाहता ताकि तुम गिन्ती पूरी करलो और उसने जिसने तुम को सत्य मार्ग दिखाया है उस की बडाई बयान करो और उसके कृतज्ञ बन जाओ"। (22:185)

हर बुद्धि रखने वाले, ईमान रखने वाले व्यस्क पुरुष तथा स्त्री पर रोज़ा फ़र्ज़ है, कोई आपत्ति हो जैसे कोई बीमार हो और रोज़ा रखने में कठिनाई हो तो रोज़ा न रखे या सफर पर हो और सफर (यात्रा) के कारण रोज़ा न रख सके तो रमज़ान के पश्चात छूटे हुए रोज़े रख कर पूरे करले, परन्तु जो सफर में भी रोज़ा रख लेता है तो ये अच्छी बात है। इसी प्रकार जो रोगी अपने हल्के रोग में साहस से काम लेकर रोजे रख लेता है तो अच्छी बात है, इस लिये कि रमज़ान में रोज़ा रखने पर जो सवाब मिलेगा और उससे जो लाभ प्राप्त होगा, वह रमज़ान के अतिरिक्त दिनों के रोज़ों पर न मिल सकेगा, हाँ गिन्ती पूरी हो जाने पर उसको कोई दण्ड न मिलेगा, बिना कारण रोज़ा छोड़ना महा पाप है और इस पर बड़ा दण्ड मिलेगा। कुछ लोग समझते है कि रोगी अपने छूटे हुए रोज़ों का फिदया अर्थात उस का शरई बदल दे दे यानी हर रोज़े के बदले में एक निर्धन मुसलमान को दोनों समय (इफ्तार और सहरी) खाना खिला दे अथवा शरई निर्धन को आधा साअ (एक किलो 600 ग्राम) गेहूँ या उसकी कीमत दे दे तो रोज़ा मुआफ हो जाएगा, परन्तु यह सहीह नही है, रोगी को अच्छा हो कर रोज़ा रखना होगा, हाँ! यदि ऐसा रोगी है कि उस का रोग ठीक होने की आशा ही नही है, उसकी ओर से फिदया दिया जा सकता है। परन्तु यदि ऐसा रोगी जिससे सभी निराश हो चुके थे स्वस्थ हो गया और उसमें रोज़ा रखने की ताकत है तो उसको अपने छूटे रोज़े रखने होंगे, चाहे उसके रोज़ों का फिदया दिया जा चुका हो। ऐसी नारी भी आपत्ति (उज़्र) वाली कहलाएगी जो गर्भित हो, या बच्चे को दूध पिलाती हो, वह भी समय पर रोज़ा न रख कर रमज़ान के पश्चात अपने रोज़े पूरे करेगी लेकिन साहस करके उसने रोज़े रख लिये तो भी ठीक है। जो स्त्री मासिक धर्म या बच्चा जनने के कारण नापाक (अपवित्र) हो अर्थात प्रसूता हो उनके लिये नमाज़ पढ़ना तथा रोज़े रखना निषेध है, वह पाक हो कर रमज़ान के पश्चात अपने छूटे रोज़े पूरे करेगी।

शेष पृष्ठ .....9 पर

जननायक

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

–अनु0 मुहम्मद गुफरान नदवी

हुजूर सल्ल0 बराबर इस्लाम की दअ़वत में लगे रहे और कुरैश की तरफ़ से रुकावटों और तकलीफ़ों को सब्र और बदराश्त के साथ झेलते रहे। कुरैश हुजूर सल्ल0 को क़बील–ए–कुरैश की शाख़ अब्दे मनाफ़ जो आपकी ख़ानदानी शाख़ थी, के दबाव और उसके सरदार अबूतालिब की हिमायत की वजह से क़त्ल कर देने का इरादा तो न कर सके थे, लेकिन तरह तरह की अज़ीयतें (तकलीफ़ें) देते थे, बदज़बानियाँ करते थे, कुरैश तअज्जुब में थे कि आप सल्ल0 यह सब सख़्तियाँ क्यों झेलते हैं? इन्सानी दिमाग़ ऐसी नफ़्स कुशी और जांबाज़ी (त्याग और बलिदान) का मक़सद (उद्देश्य) जाह व दौलत और नाम व शोहरत के सिवा और क्या ख़्याल कर सकता है, लिहाज़ा कुरैश ने भी यही ख़्याल किया, इस बिना पर कुरैश के एक बड़े शख़्स उतबा बिन रबीआ को कुरैशी सरदारों ने हुजूर सल्ल0 के पास भेजा, वह आया और कहा कि तुम से ज़रूरी बात करनी है, तुमने कुछ दिनों से यह जो झगड़े का काम शुरु कर दिया है, जिससे ख़ानदान में कश्मकश (असमंजस) और मुसीबत खड़ी हो गई है, यह तुम क्यों कर रहे हो? तुम्हारा इसके पीछे क्या मक़सद है? तुम क्या चाहते हो? अगर कोई ऐसा मक़सद (उद्देश्य) है जिसको पूरा करने से हम लोग कुछ कर सकें तो हम कर दें और तुम यह दअ़वत छोड़ दो, मक्का की रियासत चाहते हो तो वह बताओ, किसी बड़े घराने में शादी चाहते हो तो वह बताओ, दौलत का ज़ख़ीरा चाहते हो तो वह बताओ, हम कुछ कर सकते हैं तो करेंगे, हम इस पर राज़ी हैं कि तुमको मक्के का बादशाह मान लें, अगर आसेब व जिन वग़ैरह के असर से यह बात है तो हम इसको दूर कराने का कोई ज़रिया फ़राहम (उपलब्ध) कराएं यहाँ तक कि तुमको उससे शिफ़ाए कामिल (पूर्ण स्वास्थ्य) हासिल हो जाए, लेकिन इन बातों से बाज़ आओ (रुक जाओ)। उतबा को इस दरख़्वास्त (प्रार्थना) की कामयाबी का पूरा यक़ीन था।

जब उतबा सब कुछ कह चुका तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया जो कुछ कहना था आप कह चुके? उसने कहा हाँ!

आप सल्ल0 ने फ़रमाया: अब मेरी बात सुनिये!

इसके बाद आप सल्ल0 सूर–ए–फुस्सिलत की कुछ आयतें सजदह तक उनके सामने तिलावत की "शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, यह कलाम उतारा हुआ है बड़े मेहरबान, बहुत रहमवाले की तरफ से, ऐसी किताब है जिसकी आयतें वाज़ेह (स्पष्ट) रंखी गईं हैं, यह कुर्आन है अरबी ज़बान में उन लोगों के लिये जो (वास्तविकताओं) का ज्ञान रखते हैं, खुश ख़बरी सुनाने और डराने वाला है, फिर भी उनमें से बहुत से लोगों ने उससे अपना मुँह फेर लिया, और वह सुनते ही नहीं (इसके अलावा) उन्होंने यह कहा कि तू जिसकी तरफ़ हमें बुला रहा है हमारे दिल उससे परदे में हैं और हमारे कानों तक पहुँचने में कानों की गरानी (बाधक) है, और हम में और तुम में एक परदा (रुकावट) है (फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी से फ़रमाया कि) अच्छा तो अब अपना काम किये जाओ, हम भी यक़ीनन अपना काम करने वाले हैं।"

उतबा के कान में जब यह कलाम पड़ा तो उसने ख़ामोशी के साथ उसे सुनना शुरु किया, उसने दोनों हाथ पीठ की तरफ़ टेक लिये थे और कान कलामे रब्बानी के सुनने में महूव (मग्न) थे, जब रसूलुल्लाह सल्ल0 आयते सजदह तक पहुँचे तो आपने सजदह फ़रमाया और कहा अबुल वलीद! तुम्हें जो कुछ सुनना था सुन लिया, अब जैसा तुम समझो।

कलामे पाक सुनने से महवियत का एक आलम तारी हो गया, वह हाथों पर सहारा दिये गरदन पुश्त (पीठ) पर डाले हुए सुनता रहा और आख़िर में चुपचाप उठ कर चला गया, उतबा वापस गया तो वह उतबा न था, कुरैश के सरदारों ने पूछा क्या देखा? क्या कहा? क्या सुना? उतबा बोलाः ऐ कुरैश के लोगो! मैं ऐसा कलाम सुनकर आया हूँ जो न कहावत है, न शेर (कविता) है, न जादू है, न मन्त्र है, तुम मेरा कहा मानो, मेरी राय पर चलो, मुहम्मद को अपने हाल पर छोड़ दो, अगर वह कामयाब हो कर अरब पर ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) आजाएंगे तो यह तुम्हारी ही इज़्ज़त है, वरना अरब उनको ख़ुद फ़ना कर देंगे, लोगों ने यह राय सुनकर कहाः लो उतबा पर भी मुहम्मद का जादू चल गया और उतबा की राय मन्ज़ूर न की[1]।

हज़रत अबू बक्र के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मआमला

एक दिन अबू बक्र रज़ि0 एक मजमा (जन समूह) में तब्लीग़ की नियत से खड़े हुए और अल्लाह और उसके रसूल की दअवत देनी शुरु की तो मुश्रिकीन गैज़ व ग़ज़ब के आलम में उन पर टूट पड़े और उनको बहुत ज़ियादा मारा पीटा। उतबा बिन रबीआ दो फटे पुराने जूतों से उनके चेहरे को इस तरह मारता रहा कि बाद में उनके चेहरे के ख़द व ख़ाल (रंग व बनावट) पहचाने न जाते थे।

हज़रत अबू बक्र के खानदान के लोग बनू तमीम हज़रत अबू बक्र को इस हालत में उठा कर ले गए कि उनको उनकी मौत में कोई शुब्हा न था, दिन ढले आप को होश आया और पहला लफ़्ज़ जो आप की ज़बान से निकला वह यह था कि बताओ रसूलुल्लाह सल्ल0 खैरियत से हैं? उन लोगों ने इस पर उनको बुरा भला कहा (कि इस हाल में भी उनको अपने से ज़ियादा उनकी फिक्र पड़ी है) उसी वक़्त उम्मे जमील जो इस्लाम ला चुकी थीं उनसे क़रीब हुई तो उन्होंने उनसे रसूलुल्लाह सल्ल0 के बारे में दरयाफ़्त किया, उन्होंने कहा आप की वालिदा क़रीब ख़ड़ी हैं, सुन लेंगी, उन्होंने कहा मेरी अल्लाह से नज़र है कि उस वक़्त तक न कुछ खाऊँगा, न पियूँगा, जब तक रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर न हो जाऊँ, यह सुनकर वह दोनों वहाँ रुक गईं, जब लोगों की आमद व रफ़्त बन्द हुई और सन्नाटा हुआ तो वह दोनों हज़रत अबू बक्र को सहारा देकर रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में लाईं, उनकी यह हालत देखकर हुज़ूर सल्ल0 ने उनकी वालिदा के लिये बहुत दुआ की और उनको इस्लाम लाने पर आमादा किया और वह उसी वक़्त मुसलमान हो गईं[2]।

हज़रत हमज़ा का क़ुबूले इस्लाम

एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल0 कोहे सफ़ा पर बैठे थे, अबू जहल वहाँ पहुँच गया। उसने नबी सल्ल0 को पहले गालियाँ दीं, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 चुप रहे, फिर उसने एक पत्थर हुज़ूर सल्ल0 के सर पर फेंक कर मारा, जिससे ख़ून बहने लगा और हुज़ूर सल्ल0 ने बर्दाश्त किया, जवाबी कारवाई

1. सीरत इब्ने हिशामः 1/293–294

2. सीरत इब्ने कसीर : 1/439–441, अलइसाबाः 1/42

नहीं की, थोड़ी देर में हुजूर सल्ल0 के चचा हज़रत हमज़ा तीर कमान लगाए हुए एक शिकार से वापस आए, वह उस वक़्त तक आपकी नुबूवत पर ईमान नहीं लाए थे, वह कुरैश के मज़बूत, वीर और साहसी नौजवान समझे जाते थे, उनको अब्दुल्लाह बिन जदआन की बांदी ने जो अबू जहल की हरकत को देख रही थी, माजरा सुनाया, हज़रत हमज़ा को यह सुनकर गुस्सा आया और वह गुस्से में उसी वक़्त अबूजहल के पास पहुँचे और उसके सर पर ज़ोर से कमान खींच कर मारी, उससे वह जख़्मी हो गया, और उसे मारते हुए कहा कि तुम्हारी यह जुरअत कि तुम मेरे भतीजे मुहम्मद को बुरा–भला कहो और गालियां दो, अब मैं भी उनके दीन को मान लेता हूँ, और वह जो कहते हैं, वही मैं भी कहता हूँ। अबू जहल ख़ामोश रहा। इस तरह हज़रत हमज़ा इस्लाम ले आए और उनके इस्लाम लाने से कुरैश के इस्लाम दुश्मन लोगों पर उनकी शुजाअत (बहादुरी) रुसूख़ और वजाहत (मान और पहुँच) की वजह से एक बड़ी ज़र्ब (मार) लगी।

शेष पृष्ठ .....20 पर

माहे मुबारक.....

ज्ञात रहे कि प्रसूता को चालीस दिन तक रक्त आता रहता है, इस काल में वह नापाक समझी जाती है। कुछ स्त्रियों का रक्त चालीस दिन से पहले बन्द हो जाता है और वह नहा कर पाक हो जाती हैं।

यद्यपि इन बातों का ज्ञान भी लाभदायक है परन्तु यहाँ मसाइल बताना अभीष्ट नही है अपितु यह बताना है कि रोज़ा रखना कितना आवश्यक है कि जो किसी आपत्तियों से रमज़ान में रोज़े न रख सके वह दूसरे दिनों में इसकी गिन्ती पूरी करे, स्त्रियों को अपनी नापाकी के दिनों की नमाज़ मुआफ है, परन्तु रोज़ा नहीं मुआफ है, छूटे रोज़ों की कज़ा ज़रूरी है। फिर जो हष्ट–पुष्ट जवान रोजा नहीं रखते वह कितना बड़ा पाप करते हैं? आपत्ति वालों को भी आदेश है कि वह रमज़ान में सबके सामने खाने–पीने के बजाए छुप कर खाए–पियें फिर जो लोग बिना आपत्ति रोज़ा छोड़ कर खुले आम खाते–पीते हैं जरा वह सोचें कि वह क्या कर रहे हैं क्या उन्होंने यह समझ रखा है कि वह अल्लाह की पकड़ से बच जाएंगे? कदापि नहीं।

रिवायत से सिद्ध है कि रमज़ान में नेकियों का सवाब (प्रतिदिन) सत्तर गुना करके मिलता है अतः रमज़ान में खूब नेकियां करना चाहिये। जो लोग रमज़ान में अपने माल की जकात निकालते हैं वह बड़े ही बुद्धिमान तथा भाग्यवान हैं, इसी प्रकार जो लोग ईद का फित्रा रमज़ान के अन्त में रमज़ान ही में निकाल देते हैं वह भी बड़े भाग्यवान हैं।

इशा की नमाज़ के पश्चात 20 रक्अत तरावीह पढ़ना सुन्नते मुअक्किदा है इसे जमाअत से पढ़ना चाहिये, किसी कारण जमाअत छूट जाए तो अकेले बीस रकअतें पूरी कर लेनी चाहिये। रमज़ान में वित्र की नमाज़ तरावीह के बाद जमाअत से पढ़ी जाती है, उसका भी एहतिमाम करना चाहिए।

अल्लाह सभी को तौफीक़ दे कि वह रमज़ान के अन्तिम अशरे में मस्जिद में एतिकाफ करे क्योंकि एतिकाफ करना बड़ा सवाब रखता है। रमज़ान से सम्बन्धित तमाम महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख आगे पृष्ठों पर आएगा। अल्लाह तआला हम सबको रमज़ान की बरकत प्रदान करे। आमीन!

❑❑

आदर्श शासक

—नजमुस्साकेब अब्बासी नदवी

भारत के इतिहास में कई ऐसे शासकों का उल्लेख मिलता है जो अपनी रात की सुखमय निन्द्रा निछावर करके गहरी नींद सोती जनता में चक्कर लगा कर उनका दुख–दर्द जानने की चेष्टा करते तथा उनकी सहायता करते। साथ ही चोर बदमाशों का पता लगा कर उनको दण्ड देते तथा उनमें सुधार करते थे।

अरब महाद्वीप में इस्लामी दौर के आरम्भ में सभी शासकों का यही हाल था। वह अपना महल न बनवाते। भारी वेतन न लेते, सरकारी खज़ाने से उतना ही लेते जिससे एक मजदूर का गुज़र बसर हो सके तथा वह रात को आराम की नींद न सोते, भेस बदल कर चुपके से निकल जाते और प्रजा का हाल मालूम करते। उनकी जरूरतें पूरी करते, इसी प्रकार की एक घटना यहाँ लिखी जाती है।

अरब के रेगिस्तानी बद्दू (देहाती) जब एक स्थान से दूसरे स्थान अपने परिवार के साथ निकलते तो अपना खेमा (तम्बू) साथ रखते। जहाँ ठहरते खेमा तान कर घर बना लेते। अक्सर देहात वाले किसी काम से नगर आते तो इसी प्रकार आते और खेमा लगा कर दो–चार रोज़ उसमें रहते और अपना काम करके चले जाते। ऐसे खेमों की इस्लामी शासन में बड़ी देख भाल होती थी। इसी तरह का एक खेमा लगा हुआ था। इस्लामी शासक हज़रत उमर रज़ि0 रात में भेस बदल कर उस खेमें के पास पहुँचे, खेमे के बाहर एक देहाती बैठा हुआ था। अन्दर से कराहने की आवाज़ आ रही थी। भेस बदले हुए व्यक्ति ने देहाती से पूछा कि क्या बात है, कौन कराह रहा है? बद्दू ने कहा मेरी पत्नी को बच्चा पैदा होने वाला है, उसकी तकलीफ है, वही कराह रही है। पूछा, क्या कोई उसकी सहायता के लिए मौजूद है? देहाती ने कहा नहीं, यहाँ मेरा कोई नहीं है, मैं तो देहात से आया हूँ। भेस बदले व्यक्ति तो अमीरुल मुमिनीन हज़रत उमर थे, देहाती को क्या मालूम कि ये कौन है। आप जल्दी से अपने घर आए और पत्नी से कहा कि मालिक ने पुण्य कमाने का अवसर दिया है, जल्दी चलो, एक बद्दू की पत्नी बच्चा पैदा होने के कष्ट में ग्रस्त है, उसकी सहायता करके पुण्य कमाओ। अमीरुल मुमिनीन की पत्नी जरूरी सामान ले कर तुरन्त अमीरुल मुमिनीन के साथ देहाती के खेमे में पहुँच कर उस की सहायता करने लगीं। थोड़ी देर पश्चात अन्दर से आवाज़ आई, अमीरुल मुमिनीन अपने दोस्त को बेटा पैदा होने की बधाई दीजिए। अब देहाती के कान खड़े हुए कि यह भेस बदले अमीरुल मुमिनीन हैं। वह क्षमा चाहने लगा। अमीरुल मुमिनीन ने उसको डारस बंधाई। उसकी जरूरत की चीज़ें उपलब्ध करा दीं और बच्चे का वजीफ़ा मुकर्रर कर दिया।

है कोई मंत्री या अधिकारी जो सादा जीवन बिताता हो, और रात को प्रजा का हाल मालूम करके उसकी सहायता करता हो? है कोई शासक जिसकी पत्नी एक देहाती की पत्नी की, उसके बच्चा पैदा होने के कष्ट के समय उसकी सहायता कर सके? क्या ऐसा करना असम्भव है। कदापि नहीं, बस साहस चाहिये, प्रजा की सेवा का जज़्बा चाहिये, और यह जभी हो सकता है जब मनुष्य अपने पैदा करने वाले को पहचाने और मरने के पश्चात के जीवन में उसके सामने अपने को उत्तरदायी समझे।

❑❑

दुरूद व सलाम

—माहिरुल क़ादिरी

नोटः ऊपर से नीचे को पढ़ें

सलाम उस पर कि जिसने बेकसों की दस्तगीरी की
सलाम उस पर कि जिसने बादशाही में फकीरी की
सलाम उस पर कि असरारे महब्बत जिसने समझाए
सलाम उस पर कि जिसने जख्म खा कर फूल बरसाए
सलाम उस पर कि जिसने खूँ के प्यासों को क़बाएं दीं
सलाम उस पर कि जिसने गालियां सुनकर दुआएं दीं
सलाम उस पर कि दुश्मन को हयाते जावेदां दे दी
सलाम उस पर अबू सुफ्यान को जिसने अमां दे दी
सलाम उस पर कि जिसका ज़िक्र है सारे सहायफ में
सलाम उस पर हुआ मजरूह जो बाजारे ताइफ में
सलाम उस पर जो सच्चाई की ख़ातिर दुख उठाता था
सलाम उस पर जो भूखा रहके औरों को खिलाता था
सलाम उस पर जो उम्मत के लिये रातों को रोता था
सलाम उस पर जो मोटे टाट पर ज़ाड़ों में सोता था
सलाम उस पर जो दुनिया के लिये रहमत ही रहमत है
सलाम उस पर कि जिसकी जात फ़ख्रे आदमियत है
सलाम उस पर कि जिसने झोलियां भर दीं फकीरों की
सलाम उस पर कि मुश्कें खोल दीं जिसने असीरों की
सलाम उस पर कि जिसकी चाँद तारों ने गवाही दी
सलाम उस पर कि जिसकी संगपारों ने गवाही दी
सलाम उस पर कि जिसने ज़िन्दगी का राज़ समझाया
सलाम उस पर कि जो खुद बद्र के मैदान में आया
सलाम उस पर कि जिसके नाम लेवा हर ज़माने में
बढ़ा देते हैं टुकड़ा सरफरोशी के फसाने में
सलाम उस ज़ात पर जिसके परेशां हाल दीवाने
सुना सकते हैं अब भी खालिद व हैदर के अफसाने
दुरूद उस पर कि जिसकी बज़्म में किस्मत नहीं सोती
दुरूद उस पर कि जिसके ज़िक्र से सेरी नही होती
दुरूद उस पर कि जिसके तज़किरे हैं पाकबाज़ों में
दुरूद उस पर कि जिसका नाम लेते हैं नमाज़ों में
दुरूद उस पर बहारे गुलशने आलम जिसे कहिये
दुरूद उस ज़ात पर फख्रे बनी आदम जिसे कहिये
रसूले मुजतबा कहिये मुहम्मद मुस्तफा कहिये
वह जिस को हादिये दअ़ मा कदर खुजमासफा[1] कहिये
दुरूद उस पर कि जो माहिर की उम्मीदों का मलजा है
दुरूद उस पर कि जिसका दोनों आलम में सहारा है

1. जो बुरा है उसे छोड़ दो जो अच्छा है उसे लेलो

❖❖❖

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्नः एक शख्स ने एक लावल्द व लावारिस बूढ़ी औरत की जमीन पर यह समझते हुए मकान बना लिया कि इस का वारिस कोई नही है, इनकी वफात के बाद कोई भी काबिज हो जाएगा और मैं पड़ोसी हूँ, मुझे इसका हक़ है। क्या ऐसा करना शरअ़न दुरुस्त है?

उत्तरः मालिक की इजाज़त के बिना जमीन पर क़ब्ज़ा करना और मकान बनाना जाइज नही है। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने किसी की ज़मीन एक बालिश्त भी लेने पर आखिरत में सख्त सज़ा की वईद सुनाई है। फिर पड़ोसी वारिस नहीं होता, लिहाज़ा मालिक की इजाज़त के बिना उस ज़मीन पर मकान बनाना जाइज़ नही है। उस शख्स को चाहिए कि किसी तरह उस बूढ़ी औरत को कीमत दे कर या हिबा के तौर पर मकान की ज़मीन हासिल करे, वर्ना आख़िरत में सख़्त अज़ाब में मुब्तला होना होगा।

प्रश्नः बाप के माल में से बाप की इजाज़त के बिना बालिग़ बच्चों के लिए तसर्रुफ जाइज़ है या नहीं? जब कि बाप इस पर राजी नही है, और बेटे अपना हक समझते हैं, शरीअत क्या कहती है?

उत्तरः बाप की इजाज़त के बिना बालिग़ लड़कों के लिये बाप के माल में तसर्रुफ जाइज़ नहीं है, हदीस में आता है कि किसी की मर्जी के बिना उसके माल में दूसरे शख्स का तसर्रुफ करना जाइज़ नहीं है।

(मिश्कात 255)

प्रश्नः एक असर व रुसूख रखने वाले शख्स ने एक दूसरे सख्स की जमीन पर रिफाहे आम की खातिर एक शादी खाना बनवा दिया, ताकि पूरे महल्ले के लोग इससे फाइदा उठाऐं, क्या शरअ़न इसकी इजाज़त है?

उत्तरः किसी भी ज़मीन पर उसकी इजाज़त के बिना आम लोगों के फाइदे के लिये शादी खाना बनाना या किसी तसर्रुफ में लाना जाइज़ नही है, बल्कि हदीस में इसके बारे में सख्त वईद आई है कि जो शख़्स किसी की एक बालिश्त ज़मीन गसब करेगा तो सातों जमीन का तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा, लिहाज़ा ज़मीन की क़ीमत देकर ज़मीन वाले को राज़ी करना बहुत ज़रूरी है।

(बुखारी 454/2)

प्रश्नः सरकारी ज़मीन पर मस्जिद बनाना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः सरकारी ज़मीन पर सरकारी इजाज़त के बिना मस्जिद बनाना जाइज़ नही है। फुक़हा ने सराहत के साथ लिखा है कि गसब करदा ज़मीन पर मस्जिद बनाना और उसमें नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तहरीमी है।

(रद्दुल मुख्तार 381/1)

प्रश्नः एक शख्स ने अपना मकान बनाने के लिये अपनी एक ज़मीन को घेर रखा है, लेकिन मुहल्ले के लोग उसकी इजाज़त के बिना उस ज़मीन पर मुख्तलिफ तरह के प्रोग्राम करते रहते हैं, क्या ऐसा करना जाइज़ है?

उत्तरः मालिक की इजाज़त के बिना उसकी ज़मीन पर किसी तरह का तसर्रुफ जाइज़ नही है।

(रद्दुल मुख्तार 241/9)

प्रश्नः लाइट और पानी का बिना मीटर के इस्तेमाल करना या

मीटर रोकने के लिये तदबीर करना कैसा है?

उत्तरः मीटर के बिना लाइट और पानी हासिल करना या मीटर को रोक देना चोरी करने में दाखिल है और चोरी इस्लाम में सख्त गुनाह है।

(सहीह बुखारी, हदीस 6782)

प्रश्नः एक शख्स ने किसी के पास कोई चीज़ अमानत रखवाई, उसके पास से वह चोरी हो गई, ऐसी सूरत में क्या इस अमानत की अदाएगी जरूरी है?

उत्तरः अमानत की हिफ़ाज़त से अगर कोताही न हुई हो तो उसका तावान या बदला वाजिब नहीं है, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि जिसके पास कोई अमानत रखी गई उस पर ज़िमान नहीं।

प्रश्नः एक शख्स ने अपने एक दोस्त की कोई चीज़ चुरायी थी, दोस्त का इन्तिक़ाल हो गया अब उसे बार–बार ख़्याल आता है कि उसकी तलाफी मैं किस तरह करूँ और क्या करूँ कि हक भी अदा हो जाए और अल्लाह के यहाँ पकड़ भी न हो, रहनुमाई करें।

उत्तरः अगर वह चीज़ मौजूद हो तो मरहूम के वरसा तक उसे पहुँचा दिया जाए, अगर वह चीज़ मौजूद न हो तो उसकी कीमत वरसा को दे दी जाए, अगर कोई वारिस न हो तो उसकी तरफ से ईसाले सवाब के तौर पर वह रकम सदक़ा कर दी जाए। (हिदाया 615/2)

प्रश्नः ड्राइवर से गाड़ी चलाने पर अगर गाड़ी का नुक्सान हो जाए तो उसका जामिन कौन होगा? क्या ड्राइवर की तन्ख़्वाह से इसकी तलाफी की जा सकती है?

उत्तरः ड्राइवर की हैसियत अजीरे खास की होती है, फिक्हे इस्लामी का उसूल यह है कि अजीरे खास से अगर उसकी जियादती और इरादे के बिना नुक्सान हो जाए तो वह उसका जिम्मेदार न होगा, लिहाजा ड्राइवर ने अगर जानबूझ कर गाड़ी को नुक़्सान नहीं पहुँचाया बल्कि गलती से नुकसान हुआ है तो वह जिम्मेदार नहीं होगा।

(फतवा आलमगीरी 555/3)

❖❖❖

आवश्यक अनुरोध

आदरणीय लेखक जनों से अनुरोध है कि वह अपने लेखों में राजनैतिक (सियासी) लोगों का नाम न लाएं, ऐसे लेखों का छापना ठीक नहीं है इस लिये कि आज जो जेल में हैं कल वह सत्ता में आ सकता है, उस वक़्त शर्मिन्दा होना पड़ेगा, इसी तरह आज जो सत्ता में है कल जेल जा सकता है।

अतः समाज सुधार के लिए बुराईयों का संकेत करें और उनको दूर करने का उपाए बताएं किसी का नाम लेना बुराई को और अधिक बढ़ावा देना है।

धन्यवाद

नमाज़े तरावीह

–फौज़िया सिद्दीक़ा फ़ाज़िला

हज़रत आइशा रज़ि0 फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने रमज़ान की एक रात मस्जिद में नमाज़ पढ़ी, लोगों ने भी आपके साथ नमाज़ पढ़ी, फिर दूसरी रात की नमाज़ में शरीक़ होने वाले ज़ियादा हो गए, तीसरी या चौथी रात आप नमाज़ के लिये मस्जिद में तशरीफ न लाए और सुबह को फरमाया "मैंने तुम्हारा शौक़ देख लिया है और मैं इसी डर से नहीं आया कि कहीं यह नमाज़ तुम पर रमज़ान में फ़र्ज़ न कर दी जाए"। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 क़ियामे रमज़ान की तरग़ीब देते वुजूब का हुक्म नहीं। आप सल्ल0 फरमाते हैं कि जो शख़्स रमज़ान की रातों में क़ियाम करे यानी नमाज़ पढ़े और वह ईमान के दूसरे तक़ाज़ों को भी पूरा करे और सवाब की नियत से यह अ़मल करे तो अल्लाह तआ़ला उसके पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर देगें। रसूलुल्लाह सल्ल0 की वफ़ात तक यही अ़मल रहा। दौरे सिद्दीक़ी और इब्तिदाई अ़हदे फ़ारूक़ी में भी यही अ़मल रहा। यानी लोग रमज़ान की रातों में अलग–अलग नवाफ़िल की नियत से जितनी तादाद चाहते थे पढ़ते थे।

ऊपर लिखी हुई हदीसों से मालूम हुआ कि:–

1. रसूलुल्लाह सल्ल0 ने रमज़ान में सिर्फ तीन मर्तबा मस्जिद में आकर रात में फ़र्ज के अलावा नमाज़ पढ़ी, जिसको बाद में तरावीह कहा गया।

2. पूरे रमज़ान तरावीह पढ़ना बाइसे अजरो सवाब व मग़्फ़िरत है।

3. आप सल्ल0 ने नमाज़े तरावीह की तअ़दाद मुकर्रर नहीं फरमाई।

इमाम इब्ने तैमिया रह0 फरमाते हैं कि जिस शख़्स का यह ख़्याल हो कि नबीये अकरम सल्ल0 ने तरावीह की कोई तअ़दाद मुकर्रर की है जिसमें कमी–बेशी नहीं हो सकती तो वह ग़लती पर है। (फ़तावा इब्ने तैमिया 2:401)

खुद अ़ल्लामा शौकानी रह0 फरमाते हैं कि तमाम रिवायतों में नमाज़े तरावीह, उनका बाजमाअ़त या तन्हा पढ़ना तो साबित है लेकिन खास नमाज़े तरावीह की तअ़दाद और उसमें रकअ़त का तअय्युन हुज़ूर सल्ल0 से मनकूल नहीं ।

नमाज़े तरावीह ख़िलाफ़ते राशिदा में

अहदे सिद्दीक़ी में– अहदे नबवी की तरह रहा और लोग अपने तौर पर इबादत करते रहे।

दौरे फ़ारुक़ी– रमज़ान की तमाम रातों में इशा के फर्ज के बाद वित्र से पहले बाजमाअत नमाज़े तरावीह में कुर्आन मुकम्मल करने का बाज़ाबता सिलसिला अहदे फ़ारूक़ी में शुरु हुआ और बीस रकअत तरावीह पढ़ी जाने लगी। और हज़राते सहाबा रज़ि0 ने इस कैफियत पर इसी तादाद में तरावीह पढ़ी और इसमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। असलाफ़े ताबईन व असलाफ़े फुकहा–ए–उम्मत का भी यही मामूल रहा और हरमैन शरीफ़ैन में आज तक इस पर अमल हो रहा है, चूंकि हूज़ूर सल्ल0 ने तरावीह की तरग़ीब तो दी, लेकिन इन सब तफ़सीलात की वज़ाहत न फ़रमाई, ताकि यह फर्ज़ न हो जाए, इसलिए उमर रज़ि0 ने अन्सार व मुहाजेरीन

सहाबा के मशवरे से इस महबूब व मरगूब अमल को बाजाबतः शक्ल दी, चुंकि "वही" का सिलसिला बन्द होने के बाद अब फ़रज़ियत का खतरा न था।

हज़रत अब्दुर्रहमान क़ारी फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ि0 के हमराह रमज़ान में मस्जिद में गया तो देखा कि लोग मुख़्तलिफ ग्रुपों में अलाहिदा–अलाहिदा नमाज़े तरावीह पढ़ रहे हैं, कोई तो अकेला पढ़ रहा है और केई किसी के साथ मिलकर पढ़ रहा है, इस पर हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया "बाखुदा मेरा ख़्याल है कि अगर इन सबको एक इमाम की इक़्तिदा में जमा कर दिया जाए तो बहुत अच्छा हो" और सब को हज़रत उबय बिन कअब रज़ि0 की इक्तिदा में जमा कर दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि0 फ़रमाते हैं कि फ़िर जब हम दूसरे दिन निकले और देखा कि सब लोग एक ही इमाम की इक़्तिदा में नमाज़े तरावीह अदा कर रहे हैं तो हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया "यह बहुत अच्छा तरीक़ा है" और मज़ीद फ़रमाया कि अभी तुम रात के जिस आखिरी हिस्से में सो जाते हो वह उस वक़्त से भी बेहतर है जिसको तुम नमाज़ में खड़े होकर गुज़ारते हो। आपका मक़सद उस आखिरी हिस्से की अहमियत बतलाना था और रात का इब्तिदाई हिस्सा तो लोग पहले भी नमाज़ में गुज़ारते थे।

हज़रत यज़ीद बिन रूमान कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि0 के दौरे ख़िलाफत में हज़रात सहाबा तेईस रकअत अदा फरमाते थे।

हज़रत उमर रज़ि0 ने सब सहाबा रज़ि0 को हज़रत उबय बिन कअब रज़ि0 की इमामत में जमा किया और हज़रत उमर रज़ि0 ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से हैं जिन की बाबत हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि मेरी सुन्नत और मेरे हिदायत याफ़्ता ख़ुलफाए राशिदीन की सुन्नत पर अमल करो और उसी को दाढ़ों के साथ मज़बूती से पकड़े रखो। इमाम इब्ने तैमिया रह0 फ़रमाते है कि आप सल्ल0 ने दाढ़ों का ज़िक्र इसीलिए किया कि दाढ़ों की गिरिफ़्त मज़बूत होती है, अलगर्ज़ हज़रत उमर रज़ि0 का यह इक़दाम ऐन सुन्नत है।

(फतावा इब्ने तैमिया)

बैहक़ी रह0 ने लिखा है कि हज़रत साइब बिन यज़ीद रह0 फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि0 के दौरे हुकूमत में हम बीस रकअत तरावीह और वित्र पढ़ा करते थे।

यह सहीह है कि एक रिवायत में हज़रत उमर रज़ि0 की जानिब ग्यारह रकअतें मअ वित्र मन्सूब हैं, इस रिवायत से ज़ियादा से ज़ियादा यह कहा जा सकता है कि जिसमें से 23 पढ़ने की हिम्मत न हो वह ग्यारह पढ़ ले लेकिन बीस रकअत तरावीह और तीन रकअत वित्र पढ़ने को बिदअत कहना बड़ी जुरअत और नाआक़िबत अन्देशी है।

तरावीह को तहज्जुद से जोड़ना बड़ी भूल है। हज़रत आईशा रज़ि0 की रिवायत से साबित है कि आप रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअत तहज्जुद पढ़ते थे। हदीस से साबित है कि हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि रात के आखिरी पहर अल्लाह तआला अपने बन्दों की तरफ तवज्जुह फरमा कर कहता है कि "है कोई मांगने वाला जिस को मैं अता करूं, है कोई मग़्फ़िरत चाहने वाला जिस को मैं बख़्श दूं"। यह रिवायत तहज्जुद की तरग़ीब व ताकीद में है तो क्या रमज़ान के मुबारक महीने में अल्लाह तआला की यह रहमत ख़त्म हो जाती है?

शेष पृष्ठ .....19 पर

ज़कात, फित्रा और एअतिकाफ़

—इदारा

हर माल वाले मुसलमान पर ज़कात फर्ज़ है। शरीअत में माल वाला उसे कहते हैं जो साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोने का मालिक हो, अगर कुछ चाँदी हो और कुछ सोना हो, परन्तु उक्त मात्र से कम हो तो देखेंगे कि अगर सोना बेच कर चाँदी खरीदी जाए तो खरीदी हुई चाँदी और मौजूदा चाँदी दोनों मिलाकर साढ़े बावन तोला (छः सौ बारह ग्राम) हो जाती है तो मालिक साहिबे निसाब (शरीअत में मालदार) है। अगर चाँदी बिल्कुल न हो न नक़द रूपया हो, केवल सोना साढ़े सात तोला (87 ग्राम) से कम हो तो ऐसा शख़्स साहिबे निसाब नहीं, यानी शरीअत में मालदार नहीं है, लेकिन ऐसा आदमी मुश्किल ही से मिलेगा जिसके पास न सोना हो न चाँदी मगर इतना रूपया हो जिससे 612 ग्राम चाँदी (साढ़े बावन तोला) खरीदी जा सकती है वह भी शरीअत में मालदार है, साहिबे निसाब है उस पर ज़कात फर्ज़ है 18 मई 2011 के भाव से 612 ग्राम चाँदी 33048 रूपये की हुई।

परन्तु यह ख़्याल ग़लत है और कंजूसी का है कि अगर न चाँदी हो न सोना मगर नक़द हो तो जब तक सोने के निसाब के पैसे न हो तो साहबे निसाब न होगा। 18 मई 2011 ई0 के भाव से 87 ग्राम (साढ़े सात तोला) सोने का दाम 1,93,140 रूपये हुए, अतः जिसके पास न चाँदी हो न सोना मगर 33,000 रूपये हों वह जकात अदा करे, 1,93,000 का इन्तिजार करके कंजूसी न करे। अगरचि ऐसा शख़्स भी मुश्किल से मिलेगा जिसके पास 30,40 हजार रूपया तो हो मगर सोना चाँदी बिल्कुल न हो।

साहिबे निसाब मालदारों को चाहिये कि साल में कोई महीना मुकर्रर करके उसमें अपने पूरे साल का हिसाब करके चालीस्वाँ भाग अर्थात 2.5 प्रतिशत माल निकाल कर अपने निर्धन मुसलमान भाईयों पर खर्च करे, इस प्रकार कि उस माल का उनको मालिक बना दे, वह जैसे चाहे खर्च करे। ऐसे लोगों को जकात की रकम नहीं दी जा सकती जिनका रोटी—कपड़ा अपने पर वाजिब हो जैसे माँ, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी या अपनी औलाद या बीबी। अतिरिक्त इनके चाचा, चाची, भाई, बहन, खाला, खालू, फूफा, फूफी आदि को ज़कात की रक़म दी जा सकती है, याद रहे ज़कात निर्धन मुसलमानों ही का हक़ है।

ऐसे मदरसों में भी जकात देना ठीक है जिसमें ज़कात के मुस्तहिक़ तलबा पढ़ते हों। लेकिन मदरसे वालों को चाहिये कि ज़कात की रकम से न तो इमारत बनाएं न मुदर्रिस की तन्ख़्वाह (वेतन) पर खर्च करें न लाइब्रेरी के लिये पुस्तकें खरीदें, सिर्फ मुस्तहिक तलबा के खाने—पीने कपड़े आदि पर इस तरह खर्च करें कि जो कुछ उनको दें उनको उसका मालिक बना दें। दवा इलाज पर खर्च करना पड़े तो दवा इलाज के पैसे तालिबे इल्म के हाथ में दें, अर्थात ज़कात खर्च करने में खूब एहतियात करें, चाहिए कि ज़कात की रकम नमाज़ी गरीब मुसलमानों पर खर्च करें, बे नमाज़ी को देने से बचें। अगर किसी बे नमाज़ी मुसलमान को देना पड़े तो उसको पहले नमाज़ की तल्कीन करें और उससे नमाज़ की पाबन्दी का वादा लेकर उसको ज़कात दें कि इसमें आप की ज़कात ज़ाया जाने का खतरा नहीं है।

खूब याद रहे माल पर साल गुजरने ही पर ज़कात फर्ज होती है, लेकिन यह हिसाब लगाना

कि कितने माल पर कब साल गुजरा मुश्किल काम है लिहाजा कोई एक महीना ज़कात की अदायगी का मुकर्रर कर लेना ही अच्छा है, और इसके लिये रमज़ान का महीना बेहतर है, इस महीने में ज़कात का हिसाब करें।

ज़मीन अगर तिजारत (व्यापार) के लिए है तो उसपर ज़कात है, खेतों पर ज़कात नही, अलबत्ता खेत से जब गल्ला हासिल हो तो उस पर उश्र वाजिब है, यानी हासिल किये हुए गल्ले में से दस्वाँ भाग गरीबों का हक है, यह जब है जब खेत सींचा न गया हो अगर सींचा गया हो तो उससे जो गल्ला मिले उसमें से बीस्वां भाग गरीबों का है।

उश्र निकालने के पश्चात खेती से मिला चाहे जितना गल्ला हो दस्वां या बीस्वां निकालने के बाद उस पर दोबारा ज़कात नहीं। तिजारत के गल्ले पर ज़कात है।

इमाम अबू हनीफा के दोनों शागिर्दों (साहिबैन) के नजदीक पाँच वसक (लगभग 10 कुन्टल) से कम गल्ले पर उश्र नही है।

इसी प्रकार बाग़ चाहे जितना कीमती हो उस पर कोई ज़कात नहीं, अलबत्ता उसके फल पर ज़कात है, बाग़ से जो फल मिले अगर सींचने पर मिला है तो बीस्वां भाग, और बे सींचे मिला है तो दस्वां भाग ज़कात दे, बिका है तो पैसों में इसी प्रकार गरीबों का भाग लगाएं।

इसी तरह मकान चाहे जितना कीमती हो उस पर ज़कात नहीं, अलबत्ता जो मकान व्यापार के लिये बनाया हो उस पर ज़कात है। मोटर साइकिल, कार, जीप, सवारी की गाडियों पर, या किराए पर चलाने वाली गाड़ियों पर ज़कात नही। घर के बर्तन चाहे काम में आते हों या रखे हों उसपर भी ज़कात नहीं। डेग वग़ैरह पर ज़कात नहीं, तिजारती सामान पर ज़कात है चाहे बर्तन हों, चाहे ज़मीन हो, चाहे मकान हो या और कोई सामान हो।

तिर्मिजी में है सब्जियों (हरी तरकारियों) में सदक़ा नहीं, लेकिन यह समझना चाहिये कि प्याज़ और लहसुन जब कच्चे हों, हरे हों उन पर ज़कात नहीं, लेकिन खेत में पकी हुई प्याज़ की अन्ड़ियों और लहसुन की पोथियों पर ज़कात है, इसी तरह आलू भी हरी तरकारियों से अलग है, इन तीनों में बीस्वां भाग गरीब का हक है। जब जहसुन प्याज या आलू का खेत बिके तो बीस्वां हिस्सा मोहताजों को दें, या जब आलू, प्याज़, लहसुन खुदे तो बीस्वां भाग ज़कात के मुस्तहिकों को दें। खूब याद रहे कि ज़कात का मुस्तहिक वही मुसलमान है जो साहिब निसाब न हो न ऐसा हो जिसका रोटी, कपड़ा (नफ़का) अपने पर वाजिब हो। ज़कात के मसअले में जहाँ उलझाव हो आलिमों से पूछें।

फित्रा– फित्रा ईद के रोज़ का सदक़ा है, यह साहिबे निसाब पर वाजिब है, यह ऐसे लोगों पर भी वाजिब है जो चाहे साहिबे निसाब न हो यानी न तो 612 ग्राम चाँदी के मालिक हो न 612 ग्राम चाँदी खरीदने भर के रूपये रखता हो मगर अपने खेत का गल्ला बइफ़ात हो और फित्रा अदा करने में उनको दुश्वारी न हो।

फित्रा अपनी तरफ से वाजिब है और अपनी नाबालिग औलाद की तरफ से भी वाजिब है लेकिन बालिग औलाद जो साथ में है और कारोबार में शरीक़ है, मगर माल की मिल्कीयत नहीं है, उनकी जानिब से भी फित्रा अदा करना चाहिये, इसी तरह बीवी जिसके पास जेवरात तो हैं मगर उसकी कोई आमदनी नही है उसकी तरफ से भी फित्रा और ज़कात अदा करना चाहिये, अगर आप अदा न करेंगे और आमदनी न होने के सबब वह भी न अदा करेगी तो गुनाहगार होगी।

शेष पृष्ठ .....37 पर

रमज़ान के रोज़ों के ज़रूरी मसाइल

—इदारा

o नीयत किये बिना रोज़ा रखें तो रोज़ा न होगा।

o नीयत दिल से ज़रूरी है अर्थात दिल में सोंचे और इरादा करे कि सुब्ह को मैं रोज़ा रखूंगा। ज़बान से भी कह लें तो कोई हरज नहीं परन्तु दिल का इरादा आवश्यक है।

o रमज़ान के रोज़े की नीयत सूरज डूबने के पश्चात की जाएगी।

o सूर्यास्त से पहले नीयत करें तो नीयत न होगी।

o अगर रात में नीयत करना भूल गये तो दोपहर से पहले पहले नीयत कर लें, यदि दोपहर बाद नीयत करें तो रोज़ा न होगा।

o अगर रात में नहाने की हाजत हो जाये तो फज्र से पहले नहा कर फज्र की नमाज़ पढ़ने की कोशिश करें।

o अगर आँख लग जाए तो दोपहर से पहले–पहले नहा कर फज्र की नमाज़ पढ़ लें। अगर शाम तक न नहाया तो बड़ा गुनाह किया और रोजा मक्रूह कर लिया।

o कुछ लोग रोजा तो रखते हैं परन्तु नमाज़ नहीं पढ़ते हैं, ऐसे लोग महा पापी हैं, नमाज़ पढ़ना अति आवश्यक है।

o सहरी खाना सुन्नत है, सहरी एहतिमाम से खाए।

o सहरी फज्र का वक्त होने से पहले पहले खा लें। आधी रात को सहरी खाना अच्छा नही है, सहरी देर से खाएं मगर फज्र के वक्त से पहले फारिग हो जाएं।

o नाक या कान में दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है।

o आँख में दवा डालने से रोज़ा नहीं टूटता।

o रोज़े की हालत में सर में तेल लगाना जायज़ है इससे रोजे पर कोई असर नहीं पड़ता है।

o इन्जेक्शन लगवाने से रोज़ा नहीं टूटता है।

o पाखाना पेशाब के मकामात से दवा अन्दर पहुँचाने से रोज़ा टूट जाता है।

o कान में तेल डालने से रोजा टूट जाता है।

o नाक या मुँह से इन्हेलर लेने से रोजा टूट जाता है।

o पान, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि के इस्तेमाल से रोज़ा टूट जता है।

o बिना उज्र के जान बूझ कर रोज़ा तोड़ने से कज़ा व कफ़्फ़ारा ज़रूरी हो जाता है।

o कफ़्फ़ारा में 60 रोज़े लगातार रखने पड़ेगें, अगर बीच में छूट गया तो फिर से रखेगें, लेकिन औरत अगर कफ़्फ़ारा अदा करने में माहवारी के सबब नागा करेगी तो उसको फिर से रोज़े न रखने पड़ेंगे बल्कि बकिया दिन माहवारी के बाद पूरे करेगी। अतः जान बूझ कर रोज़ा रख कर तोड़ने से बचें।

o रोज़े की हालत में लड़ना, झगड़ना, गाली बकना, गीबत करना बड़ा गुनाह है, इन सबसे रोज़ा मक्रूह हो जाता है।

हाइज़ा (रजस्वला) नुफसाअ (प्रसूता, चालीस दिन तक) रोज़ा नहीं रख सकती, रमजान के बाद

पाकी की हालत में रोज़े पूरे करे।

o मरीज़ और मुसाफिर रमज़ान का रोज़ा छोड़ सकते हैं परन्तु बाद में कजा करना होगा, जो मरीज या मुसाफिर अपने मरज़ या सफ़र में रोज़ा रख लें तो अच्छी बात है।

o दूध पिलाने वाली औरत और हम्ल (गर्भ) वाली औरत रमज़ान के रोज़े छोड़ सकती हैं मगर बाद में पूरा करना ज़रूरी होगा।

o रोज़े की हालत में मंजन या पेस्ट करना मक्रूह है, अगर मंजन थूक के साथ हलक़ में उतर गया तो रोज़ा टूट जाएगा।

o क़ै हो जाने से रोज़ा नहीं टूटता जब कि मुंह में आई कै का कोई हिस्सा हलक़ में वापस न हो।

o जो क़ै अपने इरादे से की गई अगर वह जरा सी है तो कुछ हरज़ नहीं लेकिन अगर मुँह भर के है तो रोज़ा टूट जाएगा।

o रोज़े की हालत में भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं टूटता।

o मुँह के अन्दर का थूक निगलने से रोज़ा नहीं टूटता।

❖❖❖

नमाज़े तरावीह.....

हरगिज़ नहीं। क्या हुजूर सल्ल0 रमज़ान में तहज्जुद नहीं पढ़ते थे? हरगिज़ नहीं। आप ग़ैर रमज़ान में भी ग्यारह रकअत मअ वित्र तहज्जुद पढ़ते थे और रमज़ान में भी। रमज़ान में दो या तीन दिन इशा के बाद जमाअत से नमाज़ पढ़ कर फर्ज हो जाने के ख़ौफ़ से जमाअत से पढ़ना बन्द कर दिया था, लेकिन सहाबा को अलग–अलग पढ़ने की तरग़ीब दी थी और वह अलग–अलग जितनी रकअत चाहते थे पढ़ते थे और पिछले वक्त तहज्जुद भी पढ़ते थे तो यह कैसे हो सकता है कि हुजूर सल्ल0 सहाबा को इशा के बाद नवाफ़िल पढ़ने की तरग़ीब दें और खुद न पढ़ें। आप इशा के बाद नवाफ़िल ज़रूर पढ़ते रहे होंगे जिसको बाद में तरावीह कहा गया, अल्बत्ता रकअ़तों की तादाद मनकूल नहीं। बीस रकअत और तीन वित्र जमात से पढ़ना हज़रत उमर रज़ि0 के हुक्म से हुआ जो ऊपर गुज़र चुका।

पस चाहिये कि रमज़ान में बीस रकअत तरावीह और तीन रकअत वित्र जमाअ़त से पढ़ें और चुंकि हुजूर सल्ल0 रमज़ान में हज़रत जिब्रील अलै0 के साथ क़ुर्आन का दौर फ़रमाया करते थे इसलिए कोशिश करें कि पूरे रमज़ान में तरावीह की नमाज़ में क़ुर्आन मजीद का एक दौर पूरा हो। जिन लोगों में 23 रकअत पढ़ने की हिम्मत न हो वह ग्यारह पढ़ लें और 23 पढ़ने वालों पर बिदअ़त का हुक्म न लगाएँ और खुद याद रखें कि ग्यारह पढ़ने वाले 23 पढ़ने वालों के सवाब को नहीं पहुँच सकते।

मुझे मोअतबर ज़राए से मालूम हुआ है कि हरमे मक्की और हरमे मदनी में बीस रकअत तरावीह और तीन वित्र पढ़ी जाती हैं, अलबत्ता दूसरी मस्जिदों में बीसवीं रात तक आठ रकअत तरावीह और तीन वित्र पढ़ी जाती है, लेकिन 21वीं रात से तमाम मस्जिदों में ख़ास कर रियाज़ की मस्जिदों में दो किस्तों में बीस रकअत तरावीह और तीन वित्र पढ़ी जाती हैं जबकि रियाज़ के लोग शत–प्रतिशत मुहम्मद बिन अब्दुलवहाब और इमामे इब्ने तैमिया के मानने वाले हैं वहां कोई आलिम बीस रकअत पढ़ने वालों पर बिदअ़त का हुक्म नहीं लगाता।

❑❑

मुस्लिम समाज

—हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

—अनु0 मु0 अदील अख़्तर

मानव समाज का सामूहिक ढाँचा जिसको समाज के लफ्ज़ और मुआशरे की परिभाषा से नामित किया जाता है अच्छी कोशिशों के बाद ही इच्छित और अच्छे परिणाम देता है, उसके निर्धारित तर्जे अमल की पाबंदी से ही संस्कृति, तहज़ीब और अनेक समाजी कद्रों की उत्पत्ति होती है जिनसे इंसानी जिन्दगी की रंगा रंगी ज़ाहिर होती है, और एक समाज के मुकाबले में अपनी विशेषता का प्रदर्शन होता है।

किसी भी समाजी ढाँचे को ज़िन्दगी का तर्ज़ बनाने में हुकूमते वक्त और सामूहिक कार्य करने वाली कमेटियों और समाज सुधारकों का बड़ा किरदार होता है, यह काम हुकूमतों का होता है कि समाज के बड़े ढाँचें को सभ्य रखने के लिये वह अपने साधनों और दिलचस्पी को अमल में लाएं, इसमें शैक्षिक नीति और इंतेजामी तदाबीर से काम लेना पड़ता है। लेकिन अफसोस यह है कि हुकूमतें इस सिलसिले में बहुत कोताही बरतती हैं, इसकी बुनियादी वजह यह है कि हमारी हुकूमतों को अपनी सत्ता बचाए रखने के लिये जो तवज्जुह सर्फ करनी पड़ती है उसमें उनकी जद्दो जेहद का बड़ा हिस्सा सर्फ हो जाता है, इस तरह क़ौम की अख़्लाक़ी खूबी, उसकी तहज़ीबी दुरुस्तगी और समाजी शाइस्तगी का काम बहुत कम हो पाता है।

विकसित पश्चिमी देशों में सामाजिक व्यवस्था पर बहुत ध्यान दिया जाता है, लेकिन पश्चिम–पूरब की जिन्दगियों के मसअले अलग–अलग हैं, इसलिए पश्चिमी देश की अपनाई हुई समस्त पालिसियाँ पूरब के देशों के विचारों से पूरी तरह मैच नहीं खातीं। पश्चिमी देशों में ज़्यादा ध्यान व्यवस्था प्रबन्ध तक सीमित है, और भौतिक लाभ–हानि पर उसकी चिन्ता केन्द्रित रहती है, इसके उलट मशरकी कौमों में मजहबी व इंसानी कद्रों का लेहाज किया जाता है, लेकिन नवीन दौर में हमारे मशरकी मुआशरों की हालत बहुत गिरती जा रही है और खराबी में मुसलसल इजाफ़ा हो रहा है। ❑❑

जगनायक.....

रसूलुल्लाह सल्ल0 को हज़रत हमज़ा रज़ि0 के इस्लाम लाने में ताक़त मिली, क्योंकि वह मज़बूत आदमी थे, कुरैश कुछ उनसे दबते थे, लेकिन फिर भी आपको मज़ीद तक़वियत की ख्वाहिश थी, चुनांचि आप सल्ल0 ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि कुरैश के दूसरे दो ज़बरदस्त जवानों उमर बिन ख़त्ताब और अबूजहल में से किसी को इस्लाम की तौफ़ीक़ मिल जाए, आप की यह दुआ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के लिए कुबूल हो गई।

❖❖❖

सुन्नते रसूल सल्ल० और हमारी ज़िन्दगी

–अनु0: फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

–मौलाना मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की जानिब से "इस्लाहे मुआशरा" की तहरीक चलाई जा रही है। बेजा रुसूम, फुज़ूल खर्ची, शादियों में नुमूद व नुमाइश करते हुए दौलत खर्च करना, खान्दानी ज़िन्दगी में शरीअत से रूगर्दानी, तलाक़ की कसरत, अपनी अज़्वाजी ज़िम्मेदारियों को पूरा न करना, बीवी के नान नफ़क़ा और उसके हुक़ूक़ अदा न करना, अपनी औलाद की सहीह तालीम व तरबियत न करना, अपनी बुरी आदतों और हरकतों की वजह से इस्लाम की बदनामी का बाइस बनना। यह तमाम बातें इस्लाह मुआशरा के तहत आई हैं। आज अगर मुसलमान बस्तियों और आबादियों का जाइज़ा लें तो उपरोक्त उयूब आम तौर पर नज़र आएंगे।

उलमा तकरीरें करके थके जाते हैं, दानिश्वर मज़मीन लिखते लिखते बेज़ार हुए जाते हैं, लेकिन नतीजा यह निकलता है कि बजाए इस्लाह के मज़ीद बिगाड़ और ख़राबी पैदा हो रही है। आप किसी की शादी में शिरकत कीजिए तो लगता ही नहीं है कि यह उम्मते मुहम्मदिया से वाबस्ता किसी ख़ानदान में होने वाली शादी है। औरतें इस तरह नज़र आती हैं जैसे वह शादी में आने के बजाए किसी फ़ैशन परेड में हिस्सा लेने आई हैं, और मर्दों का हाल यह होता है कि जैसे वह अभी अभी यूरोप के किसी इलाके से आए हुए हैं। ज़ियाफ़त का हाल यह हो गया है कि इतने किस्म के खानों की सजावट होती है कि मेहमान क्या–क्या खाएगा शुमार करना मुश्किल हो गया है। इतना खाना फेंका जाता है कि जिससे हज़ारों भूके इन्सानों की भूक मिट सकती है, लेकिन अफ़सोस यह है कि जिन की भूक मिट सकती है उनको बुलाया नहीं जाता क्यों कि ग़रीब आदमी अगर शादियों में दिखाई देगा तो मेज़बान की इज्ज़त, वक़ार और शान व शौकत पर धब्बा आ जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने ज़िन्दगी के हर गोशे में रहनुमाई फरमाई है। ज़िन्दगी का कोई पहलू तिशना नहीं छोड़ा है। ज़रा दिल पर हाथ रख कर सोचिये कि हमारी ज़िन्दगी क्या उस रास्ते पर गुज़र रही है जिस पर गुज़रने का हुक्म आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया है या हम यहूद व नसारा के पैरु होकर ज़िन्दगी का सफ़र तै कर रहे हैं? काश मरने से पहले यह बात समझ में आ जाती।

❖❖❖

अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी
अनु0—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

सुन्नत पर अमल

सुन्नत के विस्तृत क्षेत्र को भी लोगों ने सीमित कर दिया है, अधिकतर लोग इस विषय में गलतफहमी में हैं। वह सोचते हैं कि दाढ़ी एक मुश्त हो जाए और टखने से ऊपर पैजामा, बस हो गया सुन्नत पर अमल। भई! सुन्नत पर अमल का मतलब मन व शरीर की दोनो सुन्नतों पर अमल करना है। जैसे कबूतर के दोनो पर काट दिये जाएं तो उड़ नहीं पाएगा, लेकिन कबूतर के अन्दर जान ही न हो तो वह चाहे कितना ही सुन्दर क्यों न हो, कैसे ही पर क्यों न हों कोई लाभ नही। जिनके भीतर आन्तरिक इस्लामी नियम नही, तो उसके बिना कुछ होने वाला नही है। ज़ाहिरी तौर पर देखा गया है कि वे सुन्नत के तो बड़े पाबन्द हैं मगर दिल में गन्दगी भरी हुई है। जब तक हमारा आन्तरिक ठीक नहीं होगा और आन्तरिक (बातिन) की सुन्नतों पर अमल नहीं होगा, तब तक हमारे अन्दर वह चीज़ पैदा नहीं हो सकती। उम्मत का दर्द, ये वह सबसे बड़ी सुन्नत है जिसके बिना इन्सान कोई बड़ा काम नहीं कर सकता, जिसको कुर्आन में कहा गया है कि "ऐ मुहम्मद! ऐसा लगता है कि आप उनके ईमान न लाने की वजह से जान दे देंगे" तो जाहिरी सुन्नत पर अमल हो और मन की सुन्नत पर अमल हो, तब तो काम बनेगा। हमारे हज़रत मौलाना अली मियां नद़वी रह0 बहुत ही सादगी पसन्द थे मगर वह मन व शरीर की दोनों सुन्नतों पर अमल करते थे। उनको देख कर मालूम होता था कि अन्दर का नूर बाहर फूट कर आ गया है। एक बार नदवा में बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ। हिन्दुस्तान के बड़े–बड़े विद्धान आए हुए थे। इतने में एक देहाती आदमी आया और उसने कहा कि मुझे मौलाना अली मियां साहब से मिलना है, लोगों ने पूछा, उन्हें पहचानते हो? कहा, "पहचानता तो नहीं"। लोगों में उसकी परीक्षा लेने की सूझी। मौलाना के इर्द–गिर्द बड़े–बड़े आलिम–उलमा खूबसूरत पोशाक में बैठे हुए थे, जबकि हज़रत मौलाना अली मियां साहब वही सादगी भरे अन्दाज में बैठे हुए थे। लोगों ने कहा, उन्हीं में से एक हैं, पहचान लो, वह सीधा हज़रत मौलाना के पास गया और उनसे हाथ मिलाकर आ गया। लोगों ने पूछा कि कैसे पहचाना? वह कहने लगा कि चेहरा बता रहा था। मूल रूप से जो अन्दर की सुन्नतें होती हैं, उनकी पैरवी से नूर फूट कर बाहर आता है। हज़रत मौलाना ने पूरी जिन्दगी अपने आपको छुपाने की कोशिश की, लेकिन जब देहान्त हुआ तो ऐसा आभास हुआ कि एक ढक्कन था जो खुल गया और खुशबू बाहर फैल गई। नहा धोकर, शेरवानी पहन कर, इत्र लगा कर, रमज़ान के पवित्र महीने में, जुमा के दिन अल्लाह के दरबार में उपस्थित हुए और सूरह यासीन पढ़ते हुए दुनिया से कूच कर गए। इन्तेक़ाल (देहान्त) के बाद कब्र से छः महीन तक खूशबू आती रही, जो कब्र से निकल कर मस्जिद और उसके इर्द–गिर्द फैल गई। आज भी हज़रत मौलाना की किताबों में आकर्षण है, लेकिन ऐसे लोगों को देख कर आदमी एक दम से प्रभावित नहीं होता। धीरे–धीरे उनकी सेवा में जाएगा

तो मुहब्बत बढ़ती जाएगी। एक दम से प्रभावित होना उसके मिथ्या चारी (बातिल) होने की निशानी है। होना तो यही चाहिये कि इन्सान को उस व्यक्ति की संगत में अधिक रहना चाहिये और उसे ढूँढते रहना चाहिये जो सुन्नत का पाबन्द हो। अधिकतर लोग उल्टे–सीधे लोगों के जाल में फंसते हैं और बाद में आकर रोते हैं। भाई! आप ऐसा काम क्यों करते हैं कि बाद में सज्दा सह्व करना पड़े। इसलिए आप चेक कीजिए कि सुन्नत का पाबन्द कौन है? आप उनकी संगत में बैठिये, उनकी बोली कैसी है, उनका रहन–सहन कैसा है, उनका रिश्तेदारों के साथ मामला कैसा है? मैं कहता हूँ कि एक और चीज़ देखनी चाहिये, जो हदीस से भी साबित है कि उसका रिश्तेदारों के साथ मामला कैसा है? इसलिए कि रिश्तेदारों से अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना दिल व जिगर की बात है और उसमें जो कामयाब है वह सबसे अधिक सुन्नत का पाबन्द है। हमारे हज़रत मौलाना को इस मामले में बहुत ही उच्च स्थान प्राप्त था। इसलिए अल्लाह ने उनको और उनके भाई को ये मक़ाम दिया था। वह जो जितना ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार होता था उतना ही ज़्यादा उसका ख़्याल रखते थे। हज़रत मौलाना अलीमियां साहब रह0 के एक रिश्तेदार थे, जो उनके पिता के रिश्तेदार थे, अतः उनका रिश्ता इस्लाम में बढ़ा हुआ था। एक बार उनके पैजामें में पाखाना हुआ तो हज़रत मौलाना ने कहा कि मैं पैजामे को साफ करूँगा। लोगों ने कहा, आप न करिए, तो इस पर हज़रत ने कहा कि ये मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं, मुझ पर हक़ ज़्यादा है। हम लोग तो ये देखते हैं कि मौलाना तो बहुत बड़े आदमी थे। अरे भाई! पहले छोटे थे फिर बड़े हुए। हज़रत मौलाना मुहम्मद जकरिया कान्दहलवी रह0 कहा करते थे कि जिसने हमारी जवानी देखी उसे समझ में आएगा कि हम हैं क्या? सीधी सी बात है कि जवानी देखोगे तो कामयाब हो जाओगे, बुढ़ापा देखोगे तो नाकाम हो जाओगे। कहा करते थे कि जब दाँत थे तब चने नहीं थे, अब चने हैं तो दाँत नहीं। इसी प्रकार का जीवन व्यतीत किया उन महामनाओं ने। हमारे हज़रत मौलाना ने बारह–बारह, पन्द्रह–पन्द्रह किलोमीटर साइकिल से सफर किया, ये कोई सोच सकता है कि उसी आदमी के लिए हमेशा जहाज़ खड़ा हो। तो हमें उन लोगों की जवानी को देखना चाहिए और सबक़ लेना चाहिए।

संगत से प्रभावित होने की कुछ घटना– हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह0 जब छोटे थे, लगभग चार वर्ष के तो हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रह0 उनके क्षेत्र में गए। उस समय उनको हज़रत सैय्यद साहब रह0 की गोद में दिया गया और सैय्यद साहब रह0 ने बरकत के तौर पर बैअत भी कर ली। फिर उसका प्रभाव देखिये कि हाजी साहब, हाजी साहब बन गए क्योंकि सैय्यद साहब के पास उनके गुरु (शैख) मियां जी नूर मुहम्मद साहब झनझानवी और उनके गुरु (शैख़) शाह अब्दुर्रहीम विलायती जो सैय्यद साहब रह0 के उत्तराधिकारी (ख़लीफा) थे रहे। फिर हाजी साहब ने जब उनकी संगत अपनाई तो अल्लाह ने उनको वह विशेषताएं दी कि लोग दंग रह जाते थे। हज़रत अशरफ अली थानवी रह0 से किसी ने पूछा कि हाजी साहब तो आपसे ज्ञान में कम हैं, लेकिन आप उनके पास हर समय क्यों जाना चाहते हैं? तो कहा, वह इसलिए कि और लोग तो बताते हैं लेकिन हाजी साहब तो पहुँचा देते हैं। ये अन्तर है, इसलिये उनके पास जाते हैं।

ऐसे ही एक बार हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह0 मस्जिद में आकर बैठे तो देखा कि देहात के एक आदमी वुज़ू कर रहे थे। मौलाना ने उन्हें देखा तो खड़े हो गए और अपने शिष्यों से कहा कि जब ये वुज़ू कर चुकें तो उनको मुझसे मिला देना। नमाज़ हो गई, नमाज़ के बाद उनको बुलाया और पूछा कि तुम क्या करते हो? कहा कुछ नहीं, खेती–किसानी करता हूँ, और अल्लाह–अल्लाह करता हूँ। मौलाना ने कहा, नहीं कुछ और बताओ! अल्लाह–अल्लाह का असर मैं समझता हूँ कि कैसे पड़ता है। नमाज़ पढ़ने के प्रभाव को भी मैं जानता हूँ, लेकिन तुम्हारे अन्दर कुछ और बात है, क्या तुम्हारे साथ कोई घटना घटी है? उन्होंने कहा कि हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रह0 एक बार हमारे इलाक़े में आए हुए थे, मैं उस समय छोटा सा था, मैं लोगों के बीच से निकलता हुआ उनके सामने जाकर खड़ा हो गया और उनकी नज़र मुझ पर पड़ रही थी। मौलाना गंगोही ने कहा कि बस बात समझ में आ गई, ये उसी का प्रभाव है कि तुम्हारे अन्दर से एक नूर निकल रहा है जो आसमान तक जा रहा है। तो आदमी जितना मजबूत होगा उतना ही प्रभाव पड़ेगा। अब वह देहाती थे, लेकिन सुन्नत के इतने पाबन्द थे कि कोई सुन्नत छूटती न थी। हज़रत सैय्यद साहब रह0 के प्रभावों में से विशेष प्रभाव ये था कि जो भी उनके हाथ में हाथ दे देता था, उसकी काया पलट जाती थी। इसी प्रकार आँख का भी प्रभाव पड़ता है। ये सब जानते हैं कि बच्चों को नज़र लगती है और ये नज़रें बद है। ये हदीस में भी है। कुछ लोगों की नज़र इतनी बुरी होती है कि, सही व तन्दुरुस्त को देख लें तो वह बीमार हो जाए। लोग ये भी जानते हैं कि देखने से सम्बन्ध जुड़ता है, और उसी के साथ–साथ जो अल्लाह के नेक बन्दे होते हैं उनकी नज़र में मन को प्रभावित करने की भरपूर क्षमता होती है।

दीन होता है बुजुर्गों की नज़र से पैदा– असल बात यही है कि कुछ बुजुर्गों की नज़र ऐसी होती है कि एक ही नज़र में काया पलट जाती है, और निस्बत हासिल हो जाती है और निस्बत का मतलब ये होता है कि फिर आदमी भटकता नहीं है।

मौलाना मुहम्मद अहमद प्रतापगढ़ी ने उसको समझाने के लिए कहा है–

"निस्बत उसी का नाम है, निस्बत उसी का नाम
उनकी गली को छोड़ के जाने न पाइए"।

मौलाना प्रतापगढ़ी ने उसको बहुत आसानी से समझा दिया। निस्बत का ये मतलब नहीं होता है कि आदमी भागना न चाहे, भागना तो चाहेगा लेकिन ऐसे कारण पैदा हो जाएंगे कि भाग नहीं पाएगा, उसी का नाम निस्बत है। जब आदमी अल्लाह वाले के पास रहता है तो अल्लाह उसकी रक्षा करता है। हदीस में आता है कि मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है, मांगता है तो देता हूँ, पनाह चाहता है तो पनाह देता हूँ। इसीलिए हमारे इस्लामी विद्वान (उलमा) कहते हैं कि औलिया सुरक्षित होते हैं और सुरक्षित का मतलब कुछ लोग गलत समझते हैं। उसका मतलब ये नहीं कि गुनाह नहीं होता, बल्कि वह गुनाह पर जमे नहीं रहते, उस गुनाह को बार–बार नहीं करते। उन्हें प्रायश्चित का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। मासूम केवल सन्देष्टा (नबी) होते हैं और कोई नहीं, जब व्यक्ति भले लोगों की संगत में रहेगा तो वह चीज़ उसे मिल जाएगी, अब जिस समय प्राप्त हो

जाए। कई बार ऐसा होता है कि कई–कई साल रहना होता है, लेकिन कुछ हासिल नहीं हो पाता। और कई बार ऐसा होता है कि चन्द लम्हों में काम बन गया। हज़रत करामत अली जौनपुरी रह0 जिनसे अल्लाह ने बंगाल में असाधारण काम लिया। कहने वाले कहते हैं कि उनके हाथ पर एक करोड़ लोग इस्लाम लाए। पहले बंग्लादेश में मुसलमान अल्पसंख्यक थे, अब बहुसंख्यक हो गए। ये सब मौलाना करामत अली की करामत है। उनका नाम अली था, लेकिन उनसे करामतों का इतना जहूर हुआ कि करामत का लफ़्ज़ उनके नाम से जुड़ गया। इसी स्थान पर जहाँ आप बैठे हैं, तकिया कलां में, वह आए थे और हज़रत सैय्यद साहब से बैअत हुए। सैय्यद साहब ने अट्ठारह दिन बाद कहा कि मौलाना काम हो गया है, यदि आप रुकना चाहें तो रुक सकते हैं, लेकिन आपको रुकने की आवश्यकता नहीं है। अब देखिये अट्ठारह दिन में काम हो गया। संगत की जो बरकतें थीं वह अट्ठारह दिन में हासिल हो गई थीं, और अट्ठारह दिन में पूर्ण (कामिल) हो गए थे कि सैय्यद साहब ने कहा कि मौलाना आप जाइये और बंगाल में काम कीजिए। फिर मौलाना कुछ दिन अपने शौक़ से ठहरे, उसके बाद बंगाल गए। अट्ठारह साल बाद वह अपने घर लौटे, न तो वह बंगाल के थे और न बंगाली भाषा जानते थे। फिर अट्ठारह साल बाद अपने पिता से मिलने आए और फिर दोबारा सबको वहीं लेकर चले गए और 54 वर्ष तक वहीं रहे और पूरा बंगाल बदल के रख दिया। ये अच्छी संगत का प्रभाव था कि कुछ दिनों में ही काम बन गया। लेकिन उसके लिए कुछ सिद्धान्त हैं, ये नहीं कि हराम खा रहे हैं तो भला ऐसे में संगत का असर कहां होगा? परोक्ष निन्दा (चुगली) कर रहे हैं तो संगत का प्रभाव कहाँ पड़ेगा? प्रेम, निःस्वार्थता के साथ यदि व्यक्ति रहे तो लाभ होता है, अन्यथा एक हज़ार वर्ष साथ रहे कोई लाभ नहीं होगा। सहाबा रज़ि0 भी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की संगत से कब फायदा हुआ जब वह ईमान ले आए। वर्ना अबूजहल भी तो रोज़ मिलता था, लेकिन क्या वह बदल गया? वह तो मुख़ालिफत में डटा रहा। इसी प्रकार यदि कोई आलोचना हेतु आए और मन–मस्तिष्क में इधर–उधर की बातें लेकर आए तो स्पष्ट है कि लाभ कैसे होगा? मौलाना मुहम्मद अहमद साहब प्रतापगढ़ी कहा करते थे कि जब ऐसी जगहों पर जाओ तो झुक कर जाओ क्योंकि सूफी–संत टीले हैं, झुक कर जाओगे तो कुछ हाथ आ जाएगा और यदि तुम टीला और खम्भा बन कर जाओगे तो इधर–उधर से चला जाएगा। जो आदमी झुक कर जाएगा तो उसे मिलेगा अन्यथा कुछ हाथ नहीं आएगा।

उन बुजुर्गों के पास महीनों, बरसों रहने के बाद कोई घड़ी आती है, लेकिन अल्लाह के रसूल की हर घड़ी, हर लम्हा बरकत और मुबारक था। जो भी आप सल्ल0 के पास एक लम्हे के लिए ईमान के साथ आ जाता था, उसी पल उसका काम हो जाता था, इसलिए सहाबा रज़ि0 को जो मुक़ाम हासिल है वह किसी को हासिल नहीं।

अब सैय्यद साहब रह0 के कुछ ही लोग ऐसे हैं, जिनको ये उच्च स्थान प्राप्त हुआ लेकिन अल्लाह के रसूल के पास जो भी आ गया, ईमान के साथ, याद रहे कि यहाँ ईमान और इख़्लास (निःस्वार्थता) शर्त है। नबियों की सोहबत (संगत) के लिए ईमान (इस्लाम) शर्त है औलिया की संगत के लिए निःस्वार्थता शर्त है। अब यदि निःस्वार्थता के साथ आएगा

तो संगत का लाभ होगा, और अगर इख़्लास के साथ नहीं आएगा तो फायदा नहीं होगा। हमारे इस ज़माने के जितने भी बुज़ुर्ग हैं उनका ये कहना है कि आदमी अल्लाह वालों के पास जाता रहे, उनकी संगत में जितना मौक़ा मिल जाए उससे लाभ उठाता रहे क्योंकि वह हरेक को मुहब्बत से देखते हैं, उनकी नज़र में नुकसान नही है, बल्कि उनकी मुहब्बत की नज़र का फायदा पहुँचता है। यदि प्रेम असाधारण होगा तो प्रभाव भी असाधारण होगा। फारसी का एक शेर बहुत पढ़ा जाता है कि "बिना दिखावे के बुजुर्गों की संगत में एक पल को बैठना सौ साल की इबादत से बेहतर है"। ये वही संगत है कि पल भर में दिलों की हालत बदल जाती है। हृदय के अन्दर करंट दौड़ जाता है, और एक नई रूह पैदा हो जाती है, और ये सब अल्लाह के नेक बन्दों की संगत में रहने से प्राप्त होता है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की संगत में जो जिस क़दर आदाब के साथ रहा उसका स्थान उतना ही ऊँचा है। हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने संगत के समस्त सिद्धान्त अपनाए और हज़रत अली रज़ि0 के मुकाबले में उनको जो बढ़त हासिल है उसी का परिणाम है, हज़रत अली रज़ि0 आप सल्ल0 की संगत में रहते थे, मगर चुंकि बच्चे थे और बच्चों की संगत में और बड़ों की संगत में अंतर होता है। हज़रत अबूबक्र रज़ि0 बालिग़ हो चुके थे और आप सल्ल0 के हम उम्र थे, उम्र में थोड़ा सा फर्क था। आप सल्ल0 ने नुबूवत का ऐलान फरमाया तो उन्होंने उसी समय इस्लाम कुबूल कर लिया और चुंकि उससे पहले से ही बहुत अच्छी जान–पहचान थी और एक साथ उठना–बैठना था, इस्लाम लाने के बाद और अधिक आप सल्ल0 की संगत में रहने लगे, और उनको वह मुक़ाम हासिल हुआ जो किसी और को हासिल नहीं हुआ। चुंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की संगत में, संगत के सिद्धांत के साथ रहे, सम्मान के साथ रहे। इसलिये इतना उच्च स्थान प्राप्त हुआ। फिर एक अजीब बात आप सल्ल0 ने बताई कि अल्लाह ने आदेश दिया है कि जो लोग सुबह–शाम हमें पुकारते रहते हैं, हमारी तस्बीह पढ़ते रहते हैं, हमारा ज़िक्र करते रहते हैं आप सल्ल0 उनके साथ उठे, बैठें। अब जब आप सल्ल0 को आदेश दिया जा रहा है कि अपने से कमतर लोगों के साथ रहें तो दरअस्ल ये हम लोगों से कहा गया है कि बड़े से बड़े आदमी को यह नहीं समझना चाहिये कि हम इस लायक हो गए हैं कि लोग हमारे पास आकर बैठें। बल्कि जाहिर में अपने कम दरजे के जो लोग लगें, उनके पास बैठें, क्योंकि मालूम नहीं उनमें से किसके अन्दर बहुत ऊँचे दरजे की विशेषताएं और महानताएं हों, और वह आपके अन्दर परिवर्तित हो जाए। आप सल्ल0 को आदेश इसलिए दिया गया था कि हम सीख लें, क्योंकि जगत की समस्त महानताओं में सबसे बड़ी महानता आप सल्ल0 का महान अस्तित्व है और समस्त विशेषताओं पर भारी आप सल्ल0 की विशेषता है। अतः जो आप सल्ल0 के मानने वाले हैं और अल्लाह ने आप सल्ल0 के द्वारा उन्हें उच्च स्थान प्रदान किया है लेकिन फिर भी आप सल्ल0 से ऊँचे कदापि नहीं हो सके, लेकिन ऐसे लोगों के ही पास बैठने का आदेश अल्लाह आप सल्ल0 को दे रहा है, अर्थात् कुर्आन के माध्यम से अल्लाह आदेश दे रहा है कि "आप अपने आपको रोकें उनके साथ जो अपने रब को पुकारते हैं"। तो ऐसे ही हम में से हरेक को चाहिए कि जो अल्लाह–अल्लाह करने वाला है उसके साथ बैठें।

❑❑

15 अगस्त 1947

—इदारा

भारत के इतिहास में अंकित है कि यहाँ पहले कोल, भील, द्रविड़ रहते थे। मोहनजोदड़ों आदि की खुदाई से सिद्ध किया गया है कि सभ्यता तथा संस्कृति में वह काफी उन्नति कर चुके थे, परन्तु जब आर्य लोग मंगोलिया की ओर से भारत में आए तो उस समय की यहाँ की प्राचीन जातियां किसी कारण अपनी सभ्यता खो चुकी थीं, उनके मुकाबले में आर्य लोग रंग, रूप, डील–डौल में उनसे बहुत आगे थे यह शिक्षित भी थे, तथा खेती करने और पशुपालन में बड़ी जानकारी रखते थे, लड़ाई के गुणों में भी निपुण थे, अतः उन्होंने यहाँ की प्राचीन जातियों को दबा लिया और स्वयं शासक बन गये और यहाँ के हो रहे। यहाँ के प्राचीन निवासी या तो जंगलों और पहाड़ियों मे जा बसे या दक्षिणी भारत में शरण ली। आज भी द्रविड़ कौम दक्षिण ही में पाई जाती है, जो लोग जंगलों और पहाड़ियों में चले गये थे वह आज भी खानाबदोशों और कबाइलियों की शक्ल में पाए जाते हैं। जो बच रहे वह आर्यों के सेवक बन गये जिनको आर्यों ने शूद्र की उपाधि दी।

उपजाऊ धरती, दूध देने वाली गाय, भैंस और अनाज की अधिकता, आबादी कम, खाने–पीने, रहने में बड़ी सरलता थी, और खुशहाली थी, परन्तु शिक्षा केवल एक वर्ग ब्राह्मणों में सीमित थी, इस वर्ग ने बड़ी बुद्धिमानी तथा चालाकी से पूरे समाज को चार वर्गों में विभाजित कर दिया, इस शिक्षित वर्ग ने अपने को पंडित या ब्राह्मण कहा, आर्यों ही में से एक वर्ग को शासन व्यवस्था पर लगाया और उसे क्षत्रीय कहा, तीसरा वर्ग व्यापार तथा खेती–बाड़ी और पशु पालन पर लगा, उसे वैश्य नाम दिया गया और प्राचीन निवासियों को तीनों का सेवक कह कर शूद्र नाम दिया, इस प्रकार सब अपने अपने काम में लग कर खूब आगे बढ़े। पंडितों ने तो शिक्षा क्षेत्र में जो कार्य किया उसका किसी क़ौम में उदाहरण नहीं मिलता, वेद, पुराण, मनुशास्त्र, महाभारत, रामायण जैसी पुस्तकों का संस्कृत भाषा में अद्भुत कार्य किया।

इन्हीं में से बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग उत्पन्न हुए और धर्म, तथा संस्कृति में बड़ी उन्नति की। यह कार्य बड़े लम्बे काल तक चला। आठवीं शताब्दी के आरम्भ में कुछ कारणों से मुसलमानों ने भारत में प्रवेश किया, उनकी शक्ति यहाँ बढ़ती गयी और एक समय वह आया जब वह यहां के शासक बन गये। उन्होंने भी यहां आकर आर्यों की भांति इस देश को अपना देश बना लिया और देश वासियों के हितैषी बन गये, उन्होंने कभी न सोचा कि यह देश हमारा देश नहीं है और यहाँ वह केवल शासन करने आए हैं और यहाँ का धन जहां से आए हैं वहाँ पहुँचाएंगे। कुतुबुद्दीन ऐबक से लेकर बहादुर शाह ज़फर तक लगभग साढ़े पाँच सौ वर्ष का काल मुस्लिम शासन में रहा। इन मुसलमानों ने भी सभ्यता, संस्कृति तथा शिक्षा में इस देश को बहुत कुछ दिया।

जहाँगीर काल में व्यापार के बहाने अंग्रेज़ भारत में आए और बराबर तरक्की करते रहे, यहां तक कि वह औरंगजेब के पश्चात शासन में हस्तक्षेप करने लगे और अपनी कपट, मक्कारी से यहां के शासक बन बैठे। यह कपटी अंग्रेज़ यहां बसने नहीं आए थे अपितु यहाँ के निवासियों का शोषण करने और यहाँ का धन खींच कर अपने

शेष पृष्ठ.....34 पर

स्वतंत्रता गान

—मौ० मु० सानी हसन नदवी

अगस्त पन्द्रह सैतालिस की
याद है ये इक शादी की
जुल्मों से अंग्रेज़ों के
छुटकारे की आज़ादी की
लहराता है देखो तिरंगा
अशोक चक्र है झूम रहा
सारी जनता मस्ती में है
खुशी में है आजादी की
दांव चली खूब उजली चमड़ी
विवश हुई पर जाने पर
आधी रात को छोड़ा भारत
गरचि बहुत उस्तादी की
गूँज रहा है ज़िन्दाबाद
मची हुई है जय जय कार
कहते हैं सुर सुनो कहानी
असुरों की नाकामी की
सत्य ये है तुम स्वतंत्र हुए
पर मन के पीछे भटक गये
मन के जब तुम दास हुए
तो उसने खूब शैतानी की
शिक्षा में तो उन्नति की
पर सदाचार में अवनति की
भाई चारा भूल गये
आपस मे मारा मारी की
स्वतंत्रता तो तभी भली
जब मानव में हो मानवता
मानवता बिन स्वतंत्रता
स्वतंत्रता बर्बादी की
हे मालिक तू ज्ञान हमें दे
सत्य है क्या पहचान हमें दे
सत्य मार्ग पर रहूँ सदा
ना चाल चलूं मन मानी की

हम नाज़े वतन हम फ़खे वतन, ख़ुर्शीदे वतन की पाक किरन
रौशन है हमारे दम से वतन, सहरा व गुलिस्तां कोहो दमन
मम्नून हमारे क़दमों की है, ख़ाके कनारे गंगो जमन
हम से है चमन में नकहते गुल हम से है गुलों में रंगे चमन
हम नाज़े वतन हम फ़खे वतन, ख़ुर्शीदे वतन की पाक किरन
रौशन है हमारे दम से वतन, सहरा व गुलिस्तां कोहो दमन
हम जोशे जुनूं दीवानों का होश व ख़िरद फ़रज़ानों का
हम मैकशे इल्मों दानिश हैं हम कैफ़ो नशा पैमानों का
हम ताबिशें शमए ईमां हैं हम इश्क़े बुतां परवानों का
हम में है निंहा साहिल का सुकूँ हम शोरे बला तूफ़ानों का
हम नाज़े वतन हम फ़खे वतन, ख़ुर्शीदे वतन की पाक किरन
रौशन है हमारे दम से वतन, सहरा व गुलिस्तां कोहो दमन
हम हिल्म व हया के मोती हैं हम मेहरो वफ़ा की शबनम हैं
हम इल्मो अमल का लश्कर हैं हम अज़मो यक़ीं का परचम हैं
हम नग़मये दिल हम नग़मये लब हम क़ल्बो नज़र का संगम हैं
मग़मून दिलों की राहत हैं, मजरूह दिलों का मरहम हैं
हम नाज़े वतन हम फ़खे वतन, ख़ुर्शीदे वतन की पाक किरन
रौशन है हमारे दम से वतन, सहरा व गुलिस्तां कोहो दमन

❖❖❖❖❖

कादियानियों के नये अवतार से सावधान

—इदारा

ग्राम खोजरा, पोस्ट हरेवा वाया सलखुवा जिलाः सहरसा (बिहार)। यह नये अवतार का दावा करने वाले अब्दुर्रशीद का पता है। उसने अपना मोबाईल नं0 ये 08800238988 लिखा है। उसने साफ लिखा है कि मैं ईश्वर का नया अवतार हूँ। उसने लिखा है कि ईश्वर ने मुझे दुनिया से बुराई मिटाने के लिए भेजा है, उसकी कुछ गुमराह करने वाली बातें यह हैं:—

- तमाम उलमा गुमराह हैं और लोगों को गुमराह करते हैं।
- तमाम उलमा कुर्आन नहीं समझते और लोगों को कुर्आन ग़लत समझाते हैं।
- दुनिया में केवल मुसलमान ही आतंक फैलाते रहे हैं।
- उलमा ही मुसलमानों को आतंक फैलाने पर उभारते हैं।
- अल्लाह तआ़ला मुसलमान आतंकियों को अमरीका द्वारा अज़ाब देता है।
- हज़रत मुहम्मद अल्लाह हैं, हज़रत मूसा अल्लाह हैं, हज़रत ईसा अल्लाह हैं, राम अल्लाह हैं, कृष्ण अल्लाह हैं।
- हर इन्सान के अन्दर अल्लाह का अंश है।

इसी तरह की खुराफात से उसकी पुस्तिका भरी हुई है। अंत में उसने यह निम्नलिखित अश्आर भी लिखे हैं।

''मानवता का प्रेमी हूँ
अब्दुर्रशीद है मेरा नाम
आया हूँ पिलाने सबको
कामयाबी का जाम
ईश्वर ने कहा मुझ से
एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी थाम
जा असुरों का नाश करदे
बस यही है तेरा काम''

यह शख्स बेशक दज्जालों में से एक दज्जाल है, यह अपने को अवतार भी कहता है और पैगम्बर भी कहता है। अवतार वाद एक बातिल अकीदा है।

हिन्दुओं में आर्य समाजी भी अवतार वाद को नहीं मानते। वह राम और कृष्ण को अच्छा इन्सान तो मानते हैं परन्तु ईश्वर नहीं मानते। आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बाद जो भी नुबुव्वत या पैगम्बरी का दावा करे वह झूटा है, दज्जाल है।

इस दज्जाल ने कुर्आन मजीद की कुछ आयतों का गलत मतलब लेते हुए हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को (मआ़ज़ल्लाह) अल्लाह साबित किया है जब कि कुर्आन मजीद साफ ऐलान करता है कि मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह)। दूसरी जगह आया है कि मुहम्मद तो केवल अल्लाह के रसूल हैं। (वमा मुहम्मदुन इल्ला रसूल)। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जो कल्मा सिखाया है वह ये है कि, कहोः मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इन तालीमात के होते हुए इस दज्जाल ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 और दूसरे नबियों को अल्लाह का रूप बतलाया है, अल्लाह उसे हिदायत दे, उसके अशआर के जवाब में मैं कहता हूँ:

दानवता का प्रेमी है
रखा है अब्दुर्रशीद नाम
वास्तव में इब्लीस है
करता है असुरी काम
कुर्आन को समझा नहीं
लेता है कुर्आन का नाम
तू ने जो मिशन चलाया है
वह है दज्जाली काम
भला चाहे तो तौबा कर ले
नबी का दामन ले थाम
वरना दिल से जान ले
जहन्नम है तेरा मुकाम

सहरसा वालों को चाहिए कि उससे मिल कर उससे तौबा करायें। ❑❑

क़ियामत करीब है

—ए0जे0 खान

क़ुर्आन मजीद में बताया गया है कि पाँच चीज़ों का अल्लाह के सिवा किसी को इल्म नहीं। उसी में बताया गया है कि क़ियामत आने का वक़्त सिर्फ अल्लाह ही को मालूम है और किसी को नहीं। हदीस शरीफ़ में आता है कि हज़रत जिब्रील अ0 के सवाल पर कि क़ियामत कब आयेगी, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जवाब दिया था कि इस बारे में पूछने वाले से जवाब देने वाला ज़्यादा नहीं जानता है, यानी क़ियामत आने के वक़्त का इल्म अल्लाह ही को है। अलबत्तः यह बताया था कि क़ियामत के क़रीब गुनाह बहुत होंगे और कुछ गुनाह गिनाये भी थे।

इसमें शक नहीं कि इस वक़्त दुनिया में गुनाह बहुत ज़ियादा हैं, जिसको देखो बड़े–बड़े गुनाह में फंसा हुआ है इससे न वज़ीर बचा है न एम0पी0, एम0एल0ए0 बचा है न अधिकारी लोग बचे हैं, न आम (साधारण) लोग बचे हैं। आज मज़दूर काम चोरी करता है, ठेकेदार सही काम नहीं करता है, कर्मचारी समय पर आफ़िस नहीं पहुँचता है और घूस व रिश्वत ढूँढता रहता है। अधिकारी न्याय नहीं करता, ग़बन करता है। अपने अधिकार से अपने विभाग में अपनों को भरता है, दूसरों को नौकरी देने में लाखों का घूस लेता है। मंत्री लोग करोड़ों का घोटाला करते हैं, बड़े ठेकेदारों से भारी घूस लेते हैं। बड़े व्यापारी अपने धन से जरूरत की चीज़ ख़रीद कर मंहगाई पैदा करते हैं। छोटे व्यापारी खाने–पीने की चीज़ों में मिलावट करते हैं, सरकारी कर्मचारी उनसे घूस लेकर उनको खुली छूट दिये हुए हैं। घी जो वनस्पति से तैयार होता था यानी, वनस्पति तेल से बनता था आज वह चोरी–छुपे चर्बी से तैयार होता है, गाय भैंस के दूध से जो घी निकाला जाता था आज वह घी भी चर्बी से बना कर देसी घी का सेन्ट डाल कर देसी घी के नाम से बेचा जा रहा है, दूध सेन्थेटिक है, खोया सेन्थेटिक है, मिठाई स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली है। बाज़ार में कितनी खाने की चीज़ें स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाली बिक रही हैं।

जवानों के अख़लाक़ बिगड़ गये हैं, वह न बड़ों का सम्मान करते हैं न छोटों पर दया करते हैं। जवान लड़कियां बेपर्दा घूमती हैं, नंगा पहनावा पहनती हैं। बलात्कार आम है। डॉक्टर रोगियों को लूटता है। अध्यापक ट्यूशन के लिए क्लास में विद्यार्थियों को नहीं पढ़ाता। इंजीनियरिंग कालेजों और मेडिकल कालेजों में लाखों–लाख लेकर दाखिला दिया जाता है। हर ओर पाप ही पाप नज़र आता है, लेकिन क़ियामत रुकी हुई है। जिसका कारण यह है कि महापुरुषों और सदाचारियों की भी बड़ी संख्या इस संसार में मौजूद है। क़ियामत उसी वक़्त आएगी जब संसार में कोई भी अल्लाह (ईश्वर) का नाम लेने वाला न रहेगा। क़ियामत ऐसा

अज़ाब है जिसको अल्लाह तआला अपने नाम लेने वालों को न दिखाएगा। हमको चाहिये कि हम सत्य धर्म (इस्लाम) को मज़बूती से पकड़े रहें, नेक रहें, और नेकी फैलाएँ। जब तक नेकी रहेगी क़ियामत न आएगी। अन्त में यह बात जान लें कि क़ियामत से पहले कई बड़ी–बड़ी अलामतें ज़ाहिर होंगी जो अभी ज़ाहिर नहीं हुई हैं, जैसेः

1. हज़रत इमाम मेंहदी का पैदा होना और जवान होकर दुनिया में इस्लामी हुकूमत काइम करना।

2. याजूज–माजूज फसादी क़ौम का ज़ाहिर होना।

3. काना दज्जाल का ज़ाहिर होना, जिसका फसाद मक्का और मदीना छोड़ कर सारी दुनिया में होगा।

4. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना और हज़रत इमाम मेंहदी से मिल कर दज्जाल को क़त्ल करना।

5: फिर सारी दुनिया में इस्लाम का फैल जाना।

हज़रत इमाम मेंहदी चालीस साल तक इस्लामी हुकूमत चलाएंगे। सारी दुनिया में अम्न व अमान होगा। खुशहाली होगी। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत इमाम मेंहदी की वफ़ात के बाद शैतान का ग़ल्बा होगा। सारी दुनिया में कुफ्र व शिर्क फैल जाएगा, फिर एक हवा चलेगी जिसके असर से सारे ईमान वाले यह दुनिया छोड़ देंगे, दुनिया में कोई अल्लाह का नाम लेने वाला न रहेगा। हर तरफ गुनाह, फसाद फैल जाएगा तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम सूर फूकेंगे, उसकी आवाज़ इतनी तेज़ होगी की सारे जानदार घबरा कर इधर–उधर भागेंगे, आवाज़ तेज़ होती जाएगी, सारे इन्सानों और जानवरों की घबराहट बढ़ती जाएगी। फिर सब मरने लगेंगे और सब मर जाएंगे। आवाज़ तेज़ होती जाएगी, ज़मीन फट जाएगी, पहाड़ धुनी हुई रूई की तरह उड़ेंगे, तारे टूट पड़ेंगे, सूरज और चाँद बेनूर हो जाएंगे, आसमान फट जाएगा, यह बड़ा सख़्त अज़ाब होगा। फिर कुछ दिनों तक ख़ामोशी रहेगी। फिर अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम दोबारा सूर फूंकेंगे। ज़मीन पैदा हो जाएगी। उस पर सारे इन्सान व जिन और जानवर ज़िन्दा हो कर घबराए हुए निकल पड़ेंगे, सूरज पैदा हो कर करीब से चमकेगा, सख़्त गर्मी होगी, ज़मीन जल रही होगी, धूप सख़्त होगी, अर्श के सिवा कहीं साया न होगा, उस वक़्त कोई किसी के काम न आएगा, नफ़्सी–नफ़्सी का आलम होगा, फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की सिफारिश पर अल्लाह तआला अपने बन्दों का हिसाब लेंगे, पापियों और गुनहगारों के लिए जहन्नम का फैसला होगा, जहन्नम में आग ही आग है, पापी जहन्नम में जलेंगे, लेकिन मरेंगे नहीं, बराबर अज़ाब भुगतेगें, नेक लोगों और सदाचारी लोगों के लिए जन्नत का फैसला होगा, जन्नत में हर तरह के अच्छे फल मिलेंगे, दूध मिलेगा, शहद मिलेगा, खिदमत करने वाले लड़के मिलेंगे, हूरें मिलेंगी, वहां हर तरह का सुख ही सुख होगा, जन्नत वाले सदा जन्नत में रहेंगे।

❖❖❖

निक़ाब

(इस लेख के सारे नाम फर्ज़ी हैं)

—इदारा

भगवान दीन और ईश्वरी प्रसाद दोनों मित्र थे, दोनों ने एक साथ एम0ए0 किया था। ईश्वरी प्रसाद को दिल्ली में एक अच्छी पोस्ट मिल गई थी और वह दिल्ली शिफ्ट हो गया था। भगवान दीन ने एल0टी0 किया और लखनऊ के एक कालेज में नौकरी पाई, कुछ ही सालों में वह प्रिन्सिपल हो गया। दोनों की आर्थिक दशा बहुत अच्छी थी, दोनों बीवी–बच्चों के साथ उच्च जीवन बिता रहे थे। नौकरियों पर लग जाने के पश्चात 20 वर्षों तक भेंट न हुई थी। इस काल में दोनों एक बेटी और बेटे के बाप बन चुके थे। ईश्वरी प्रसाद के बेटे–बेटी दिल्ली में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। भगवान दीन की बेटी इस बीच एम0ए0 कर चुकी थी और अब उसकी शिक्षा बन्द थी। बेटा भी बी0ए0 में था। दोनों मित्रों तथा सहपाठियों में जब तब चिट्ठी द्वारा आधी भेंट हो जाया करती थी। भगवान दीन का दिल्ली में कोई काम था। जिसकी सूचना उसने अपने मित्र ईश्वरी प्रसाद को चिट्ठी द्वारा दी। ईश्वरी प्रसाद बहुत ही प्रसन्न हुआ तथा प्रफुल्लित होकर अपने मित्र भगवान दीन को लिखा कि आप पूरे परिवार के साथ आएं, दिल्ली में अपना काम निबटायें और कम से कम तीन दिन तक मुझे मेरे अतिथि बन कर मुझे आतिथ्य बनने का अवसर प्रदान करें तथा मेरे घर दीवाली की प्रसन्नता लाएं।

भगवान दीन अपनी पत्नी, बेटे और बेटी के साथ ट्रेन द्वारा नियुक्त तिथि तथा समय पर दिल्ली स्टेशन पहुँचा, ईश्वरी प्रसाद अपनी पत्नी के साथ अपनी गाड़ी से अपने मित्र के स्वागत को स्टेशन पहुँचा। सबने एक दूसरे से हाथ मिलाया, गले मिले परन्तु ईश्वरी प्रसाद तथा उनकी पत्नी के आश्चर्य की सीमा न रही जब उन्होंने भगवान दीन के साथ एक निकाब पहने महिला को देखा। वहां कुछ न पूछा, घर आए, चाय पानी तैयार था, जब चाय पर बैठे तो ईश्वरी प्रसाद ने अपने मित्र से पूछ ही लिया, यह मुस्लिम महिला कौन है और आप अपनी प्रिय बेटी को क्यों न लाए? भगवान दीन ने ठंडी सांस खींची और गम्भीर स्वर में कहा यह आपकी बेटी ही है। ईश्वरी प्रसाद ने बहुत ही आश्चर्य से पूछा कि यह मुसलमान कैसे हो गई और फिर भी आपके साथ क्यों है? भगवान दीन ने भीगे नेत्रों से उत्तर दिया कि इसका वृतांत उसी से आपकी पत्नी पूछें एवं यह जान लें कि वह मुसलमान नहीं हुई, हिन्दू ही है।

ईश्वरी प्रसाद मित्र के आँसू देखकर दुखी हुआ साथ ही आश्चर्य तथा आशंका में डूब गया।

चाय–पानी करके भगवान दीन अपने बेटे के साथ दिल्ली में जहाँ काम था वहां चला गया, उसकी पत्नी और बेटी रूपवती मित्र के घर शेष रहीं। ईश्वरी प्रसाद अपनी पत्नी, भगवान दीन की पत्नी और बेटी के साथ दालान में बैठा, ईश्वरी प्रसाद ने बड़े ही आश्चर्य से रूपवती से प्रश्न किया बेटी! हम लोगों में तो न परदा होता है न निकाब पहना जाता है, फिर तुम निकाब क्यों पहने हो

और मुख क्यों नहीं खोलती हो? रूपवती ने मुहँ खोलते हुए कहा कि लो देख लो मेरा मुखड़ा और जान लो कि मैं निक़ाब क्यों पहनती हूं और मुखड़ा क्यों छुपाती हूँ।

मुखड़ा खुलते ही ईश्वरी प्रसाद और उनकी पत्नी चिल्ला उठे कि अरे राम, राम, क्या यह बच्ची ऐसी ही जन्मी थी? भगवान दीन की पत्नी ने उत्तर दिया नहीं, यह तो बड़ी सुन्दरता के साथ जन्मी थी। ईश्वरी प्रसाद ने पूछा फिर यह जल कैसे गई? भगवान दीन की पत्नी ने एक आह खींची और कहा की लीजिए इसका विस्तार सुनिये।

रूपवती मेरी पहली सन्तान है, यह जन्म से सुन्दर थी, हम दोनों को अति प्रिय थी, अद्भुत बात यह है कि इसको कभी कोई रोग न लगा, सदैव स्वस्थ रही, शिक्षा आरम्भ हुई, हर कक्षा प्रथम श्रेणी से पास की जब नीचे की कक्षाएं पूरी हुईं, कालेज में नाम लिखाया गया, कालेज घर से कुछ ही दूर था, बेटी ने कहा, मैं कालेज पैदल आया–जाया करूंगी यह मेरे स्वास्थ के हित में होगा। अतः वह पैदल आने–जाने लगी। एक दिन बेटी ने कहा, मम्मी कुछ युवक मुझे घूरते हैं, मेरा मन कहता है मैं मुस्लिम महिलाओं की भाँति निक़ाब पहन कर निकला करुँ। मैंने बेटी को डांटा क्या तू मुसलमान हो जाएगी? कई आफिसर तेरे बाप के शिष्य रह चुके हैं, किसी की मजाल नहीं कि तुम को छेड़ सके। बेटी चुप हो गई और बराबर कालेज आती–जाती रही। आगे का वृतांत रूपवती स्वयं सुनाएगी।

रूपवती बोली चाचा जी! मेरा फ़ाइनल इम्तिहान चल रहा था, कई युवक मुझे रास्ते में घूरते, मुझे बहुत खराब लगता परन्तु अब तक किसी ने मुझे छेड़ने का साहस न किया। एक दिन एक आफिसर का बेटा जो रास्ते में खड़ा था बोल ही पड़ा "रूपवती मैं तुम्हारे संग जीवन बिताना चाहता हूँ" मैंने उसे कड़े स्वर में कहा "क्या तुझे यह पसन्द है कि तेरी बहन से कोई युवक ऐसी बात कहे?" यह कह कर मैं आगे बढ़ गई। तीसरे दिन मेरा अन्तिम पेपर था, लौटते समय उसी स्थान पर एक काला कलूटा हष्ट–पुष्ठ युवक खड़ा था, जहां उससे पहले उस आफिसर के बेटे ने बात की थी। इस कलूटे के हाथ में एक बोतल थी, वह मेरी ओर झपटा और मेरे चेहरे पर बोतल उडेल कर भाग खड़ा हुआ, मैं चिल्ला कर गिर पड़ी, कुछ लोग मुझे उठाकर मेरे घर लाए, मम्मी, पापा के होश व हवास उड़ गये। तुरन्त डॉक्टरों से सम्पर्क किया, डॉक्टरों ने देख कर कहा आँखें सुरक्षित हैं। कई महीने चिकित्सा के पश्चात मैं स्वस्थ हुई, दर्पण में मुखड़ा देख फूट–फूट कर रोई और पापा से कहा अब मैं निक़ाब अवश्य पहनूंगी, यह मुखड़ा क्या किसी को दिखाने योग्य है? आप निक़ाब न पहनाएंगे तो मैं विष पी लूँगी, क्या अच्छा होता इस घटना के पूर्व मैं निक़ाब में होती। पिता जी निक़ाब ले आए तब से मैं निक़ाब पहनती हूँ, चाचा जी आप ही बताएं क्या यह मुखड़ा किसी को दिखाने योग्य है? कदापि नही यह कह कर रूपवती ने रोते हुए अपना चेहरा छुपा लिया और देर तक रोती रही।

भगवान दीन की पत्नी बोली बड़े भय्या! अब सबसे बड़ी कठिनाई, रूपवती के विवाह की थी, इस मुखड़े की लड़की को कौन व्याह सकता था, हम लोगों के समक्ष बड़ी कठिन समस्या थी। अन्ततः हम लोगों ने एक अविवाहित

सूरदास से सम्पर्क किया, वह कथक कालेज में संगीत विज्ञान के बड़े गुरु हैं, भारी वेतन पाते हैं, उन्होंने हमारी मांग स्वीकार की और हम लोगों ने रूपवती और सूरदास जी की आयु में भारी अंतर होते हुए भी उनसे बेटी ब्याह दी। दोनों प्रसन्न हैं और प्रसन्नता पूर्वक जीवन बिता रहे हैं, परन्तु यह दुखद घटना भुलाई नहीं जा रही है। ईश्वरी प्रसाद और उनकी पत्नी ने भी अपना दुख प्रकट किया और कहा इस घटना से यह सीख मिलती है कि जिस प्रकार बेटी ने अपने कुरूप मुख को लोगों से छुपाना आवश्यक जाना उसी प्रकार रूपवान नारियों को कुदृष्टि वालों से अपना मुखड़ा छुपाना कम आवश्यक नहीं है। आज सह शिक्षा में युवकों तथा युवतियों की जो दशा है वह किसी से छुपी नही है। हमारी सभ्यता में भी पहले घूँघट था, अब नहीं रहा, हमारी संकृति में, सह शिक्षा नहीं थी परन्तु यूरोप और अमरीका ने हमारी सभ्यता को नष्ट करके रख दिया है और वह दिन दूर नहीं जब पिता के नाम के स्थान पर माता का नाम लिखा जाएगा।

❖❖❖

15 अगस्त 1947.....

देश ले जाने आए थे। यहाँ की जनता ने शीघ्र ही भांप लिया कि यह हमारे देश को लूटने आए हैं, और वह अंग्रेजों का विरोध करने लगे, इस विरोध को अंग्रेज़ी सत्ता ने दबाना चाहा और विरोधियों को गोली तथा कारावास देते रहे। इसमें सबसे बड़ा विरोध 1857 का गदर था जिसमें लाखों लोग मारे गये। इस विरोध में हिन्दू भाइयों को भी हानि पहुँची परन्तु मुसलमानों को जान व माल की बड़ी हानि उठानी पड़ी, परन्तु सफलता न मिली अपितु अंग्रेज़ों का शासन और शक्तिशाली हो गया।

यद्यपि अंग्रेज़ों ने देश वासियों का घोर शोषण किया फिर भी देश में बड़े–बड़े विद्धान तथा नेता विद्यमान थे जिन्होंने इस अत्याचारी शासन के विरोध में व्यवस्थित आन्दोलन चलाया, उन नेताओं में मौलाना मुहम्मद अली जौहर, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जैसे बड़े–बड़े योग्य नेता थे।

यहाँ यह याद रहे कि हम किसी के दास या गुलाम कभी नहीं रहे, हाँ! अत्याचारी शक्ति हम पर शासन कर रही थी, जिसकी शक्ति का मुकाबला हम नहीं कर पा रहे थे, इसको गुलामी कहना अपना अपमान करना है। आज अमरीका अपनी शक्ति से कितने देशों पर अत्याचार कर रहा है, लाखों जानें मार चुका है कोई देश उसकी शक्ति का मुकाबला नहीं कर पा रहा तो क्या यह सब अमरीका अत्याचरी के गुलाम अथवा दास हैं? कदापि नहीं। इसी प्रकार अंग्रेज़ हमारे देश पर हमारी मर्ज़ी के विरुद्ध शासन कर रहा था, हम उसके अत्याचार के शिकार थे परन्तु उसके गुलाम कभी न थे। हमारे वीर जवान, हमारे योग्य नेता वीरता पूर्वक उसकी गोलियाँ खा रहे थे, उस की जेलें भर रहे थे परन्तु उसके आगे झुक नहीं रहे थे, इसलिए कि हम गुलाम न थे आज़ाद थे, दास न थे, स्वतंत्र थे।

अन्ततः हमारी यह स्वतंत्र वीरता, हमारे नेताओं का स्वतंत्र साहस रंग लाया और 15 अगस्त 1947 ई0 को उजली चमड़ी वाले अत्याचारी देश छोड़ने पर विवश हुए, जिसे हम स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। स्वतंत्रता गुलामी से नहीं, स्वतंत्रता दासता से नहीं बल्कि स्वतंत्रता अत्याचार से। भारत देश ज़िन्दाबाद, हमारे बुद्धिजीवी अमर रहें, हमारे जवान ज़िन्दाबाद, हमारे किसान ज़िन्दाबाद, हमारे श्रमिक अमर रहें।

❑❑

कुछ वृतांत आपके सेवक का

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

प्रमाण पत्रों के अनुसार 11 अगस्त 1933 ई0 को ग्राम पूरा रज़ा खाँ (बाराबंकी) में जन्म लिया। 1939 ई0 में प्रेप्रेट्री स्कूल पूराएं में शिक्षा आरंभ हुई। कक्षा चार नोटी फाइड एरिया स्कूल रुदौली से और मार्च 1948 ई0 में हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल रुदौली से मिडिल पास किया। पिता जी मुहम्मद इस्हाक़ मरहूम के आदेशानुसार शिक्षा छोड़ कर खेती में लग गया। विवाह तो 1942 ई0 में हम दोनों की नाबालिग़ी ही में हो चुका था। 1951 ई0 में पिता जी का देहान्त हो गया। परिवार का भार मुझ पर आ पड़ा, खेती भी करता व्यापार भी, परन्तु न धनवान हो सका न निर्धन ही रहा। 1953 ई0 में बाढ़ से पहले धान की फसल नष्ट हुई फिर गेहूँ की, परेशान हो गया तो अब नौकरी की सूझी। खेती के कामों में जुताई, मडाई, चरखी, बेड़ी हर काम में ख्याति प्राप्त की, बैल गाड़ी भी खूब चलाई। अल्लाह ने स्वास्थ्य प्रदान किया था, कुश्ती, लाठी आदि में भी सफलता पूर्वक भाग लिया।

मिडिल प्रथम श्रेणी में पास किया था तथा गणित में विशेष योग्यता प्राप्त की थी, उर्दू, फारसी तथा गणित में अच्छा ज्ञान रखता था।

जब खेती बाढ़ से नष्ट हुई, व्यापार में भी घाटा हुआ तो फैजाबाद में अन्तिम बार 6 किलो चना बेच कर व्यापार बन्द कर दिया। इधर एक भाई कयामुद्दीन अब जवान हो चुके थे, उनकी शादी कर दी थी, उन्होंने खेती संभाली और मैं देहात के मकतब में 30 रूपये मासिक वेतन पर पढ़ाने का काम करने लगा। वहीं 1956 ई0 में मौलाना अली मियां रह0 से भेंट हुई, उनके परामर्श अथवा आदेश पर 1960 ई0 में नदवे आ गया। एक वर्ष नदवे के लिये चन्दे का काम किया, फिर तब्लीग़ी मरकज़ की मस्जिद में स्थापित नदवे के मकतब में पढ़ाना आरम्भ किया। साथ ही मस्जिद नवाजी में मुअज़्ज़िनी और इमामत का काम संभाला। शाम को मकतब—ए—इस्लाम और माहनामा रिज़वान के ऑफिस में काम करने लगा। उस समय मुझे नदवे से 45 रूपये, मस्जिद से 20 रूपये तथा दो वक़्त का खाना और मकतब—ए—इस्लाम से 20 रूपये मिलते थे, मैं बहुत ही खुश था।

1963 ई0 में मुझे अहात—ए—दारुल उलूम में मदरसा सानवीया में बुला लिया गया जो अभी नया—नया काइम हुआ था, जिसके हेड मास्टर जनाब मुहम्मद हसन खाँ अर्शी थे। मैं उनका नाइब था, यहाँ मैंने कई वर्षों तक उर्दू, फारसी और हिसाब पढ़ाने में ख्याति प्राप्त की, साथ ही अर्शी साहब से स्कूल व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त किया। सानविया में आठवीं तक अरबी के साथ स्कूली मजामीन भी पढ़ाए जाते थे। अब मैंने मस्जिद की इमामत छोड़ दी, परन्तु माहनामा रिज़वान के आफिस का काम शाम में करता रहा, मैंने वहां जनाब मौलाना मुहम्मद सानी हसनी से मैगज़ीन पत्रकारिता का प्रशिक्षण लिया

और 16 वर्ष तक अभ्यास का भी खूब अवसर मिला।

अब मुझमें शिक्षा प्राप्ति की इच्छा जागी। मैंने हाई स्कूल और इण्टर की परिक्षाएं व्यक्तिगत से पास की, फिर बी0ए0, एम0ए0, पी0एच0डी0 तक शिक्षा पूरी की।

भाग्यवश मेरी कोशिश और मौलाना मुहम्मद मियां रह0 की सिफारिश पर 1979 ई0 में मुझे रियाज विश्वविद्यालय से स्कालर शिप मिल गई। मैं अरबी भाषा से ना वाकिफ था, वहां पहले अरबी भाषा का ज्ञान दो वर्षों में प्राप्त किया, फिर अरबी में बी0ए0 का कान्डेन्स कोर्स करके तफ्सीर व हदीस में एम0ए0 किया। यह शिक्षा मेरी सात वर्षों तक चली। इस काल में मैंने पाँच हज किये और दो हज अपनी पत्नी से कराये तथा एक हज माता जी से कराया। 1985 ई0 में अपने देश आ गया और फिर नदवे से सम्बन्ध जोड़ा। मदरसा सानवीया अब माहद कहा जाने लगा था, माहद की हेडमास्टरी प्राप्त हुई, और 1998 ई0 में 65 वर्ष की आयु में रिटायर्ड हुआ, परन्तु एक्सटेन्शन पर सेवाएं जारी रहीं, जब माहद शहर से बाहर सिकरौरी चला गया तो मुझे मुआविन नाजिर शोबा तामीर व तरक्की का पद देकर अहात–ए–दारुल उलूम में बुला लिया गया। 2001 ई0 में जब सच्चा राही का उद्घाटन हुआ तो मुझे उस का सम्पादक नियुक्त कर दिया गया। अब मुझ पर रोगों के आक्रमण आरम्भ हुए, एक–एक करके दाँत गये, गठिया हुई। इधर दो वर्ष पहले मोतिया बिन्द हुआ, आप्रेशन हुआ लेकिन बाद में दोनों आँखों के पर्दे खराब हुए जो चिकित्सा रहित हैं, रास्ता चल लेता हूँ, लिख भी लेता हूँ, पढ़ नहीं सकता हूँ, दूसरों से पढ़वा कर काम करता हूँ। अप्रैल 2012 से विवश होकर सेवा छोड़ देने का इरादा है। अठहत्तरवें वर्ष में हूँ। अल्लाह ईमान पर उठाए। इस अठहत्तर वर्ष का स्वयं लेखा जोखा करता हूँ तो लगता है कि मेरी झोली में भलाईयों का अभाव है, पापों का अंबार है। परन्तु आशा है कि मेरा दयालू रब मुझे अवश्य क्षमा कर देगा, सभी पाठकों से भी क्षमा चाहता हूँ।

❑❑

ग़ज़ल

— हफ़ीज़ मेरठी

राह रोकेंगे दश्तो–दरिया क्या
अज़्म के सामने हिमाला क्या

उसकी तौफ़ीक़ ही से है सब कुछ
वरना मैं क्या मेरा इरादा क्या

बूंद भर में निहाल हो जाऊं
वो नवाज़ें तो कम–ज़ियादा क्या

आदमी को कहीं क़रार नहीं
बढ़ गई हद से हुब्बे–दुनिया क्या

हर बुने–मू बना है शुक्रो–सिपास
इससे बढ़कर कोई वज़ीफ़ा क्या

जब ये तय है कि बे–मिसाल है वो
फिर ये तश्बीहो–इस्तिआ़रा क्या

कुन कहा और बन गई दुनिया
इस कहानी की रूप–रेखा क्या

मेरे पीछे पड़ी है क्यों दुनिया
मुझको दुनिया से लेना–देना क्या

सब मेरी दास्तां के टुकड़े हैं
लूट क्या, खून क्या, ख़राबा क्या

आज दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं
मंज़रे क़त्ल क्या, तमाशा क्या

अक़्ल हैरान है परेशां है
हो गया ज़िन्दगी का नक़्शा क्या

हम ख़याली नहीं तो कुछ भी नहीं
हम निवाला–ओ–हम पियाला क्या

ये नया आलमी–निज़ाम 'हफ़ीज़'
क्या समझात थे और निकला क्या।

❖❖❖

ईमान वाले परस्पर भाई हैं

—इदरा

सूर–ए–हुजुरात की एक आयत का अनुवाद है कि "ईमान वाले तो आपस में भाई हैं, (यदि वह परस्पर लड़ जाएं तो) उनमें मेल करा दिया करो"।

सूर–ए–माइदा में घोषित किया जा चुका है कि यह दीन (इस्लाम) अल्लाह की ओर से पूर्ण कर दिया गया है, अतः न तो इसमें कोई कमी की जा सकती है ना ही कुछ बढ़ाया जा सकता है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने दीन में नई बात निकालने को पथभ्रष्टता कहा है "कुल्लु बिदअतिन ज़लातुन" और बताया कि हर पथ भ्रष्टता जहन्नम में है अर्थात हर पथभ्रष्ट जहन्नम का दण्ड पाएगा। अतः जो दीन अल्लाह के नबी सल्ल0 से मिला है उसी पर जमे रहो न घटाओ न बढ़ाओ।

अल्लाह की महब्बत, अल्लाह के रसूल सल्ल0 से महब्बत तो ईमान के महत्वपूर्ण अंग हैं जिसके बिन कोई ईमान वाला हो ही नही सकता, और अल्लाह का आज्ञा पालन तथा नबी सल्ल0 के अनुकरण के बिना न अल्लाह की महब्बत सिद्ध हो सकती है न अल्लाह के रसूल सल्ल0 की महब्बत सिद्ध हो सकती है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 की महब्बत में बिदअत ईजाद करना (दीन में नई बात निकालना) महब्बत कदापि नही है, यह तो एक प्रकार से नबी सल्ल0 के कथनों और व्यवहार में एक तरह से (मआज़ल्लाह) कमी सिद्ध करना है कि यह बात उन्होंने न बताई थी जो मैं बता रहा हूँ। ज़रा सोचने की बात है और डरने की बात है।

निःसन्देह अल्लाह के रसूल सल्ल0 का ज़रा भी अपमान कुफ़्र है, परन्तु जिसने अल्लाह के रसूल सल्ल0 का अपमान न किया हो उस पर अपमान का आरोप लगाना भी कुफ़्र है।

❑❑

ज़कात, फित्रा और.....

फित्रा ईद के रोज़ का सदक़ा है लेकिन बेहतर यह है कि ईद से दो तीन रोज़ पहले अदा कर दिया जाए, इसमें फित्रा पाने वाला उस गल्ले या रकम से ईद की तैयारी कर लेगा। वहीं फित्रा देने वाले को रमज़ान का बढ़ा हुआ सवाब मिलेगा।

फित्रे में पौने दो सेर जो नई तौल में एक कि0 600 ग्राम के बराबर है गेहूँ या उसकी कीमत जौ दे तो उसका दो गुना दें।

एअ़तिकाफ– शरीअ़त की भाषा में एअ़तिकाफ सुन्नत अलल किफाया है अर्थात बस्ती या मुहल्ले का एक व्यक्ति अगर एअ़तिकाफ कर लेगा तो सबकी ओर से सुन्नत अदा हो जाएगी। एअ़तिकाफ ऐसी मस्जिद में करना चाहिये जिसमें पाँचों वक्त की अजान व नमाज़ का प्रबन्ध हो। 20 रमज़ान की शाम को मगरिब की नमाज़ से पहले एअ़तिकाफ की नीयत से दाखिल हो जाएं, और ईद का चाँद दिखने की सूचना पर ही मस्जिद से निकलें। एअ़तिकाफ करने वाले को मोअतकिफ कहते हैं, मोअतकिफ के लिये आवश्यक है कि पाँचों वक्त की नमाज़ जमाअत से पढ़े और पूरा अ़शरा (दहा) इबादत, तिलवात, दुआ, ज़िक्र आदि में गुजारे। पाखाना–पेशाब के अलावा मस्जिद से न निकले। मस्जिद ही में खाए–पिये और सोये। शरअी उज्र के बिना मस्जिद से बाहर निकलते ही एअतिकाफ टूट जाएगा और अगले वर्ष रमज़ान में उसकी कज़ा रखनी होगी। एअतिकाफ के दूसरे मसाएल के लिए किताबें देखें या जानकारों से पूछें।

❑❑

अहले ख़ैर हज़रात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमात में लगा हुआ है, इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से पिछले साल तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़े, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो गई। इस सूरते हाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधन कमेटी ने नये छात्रावास निर्माण का निर्णय लिया। अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरु भी हो गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्जिला होगा, 60 कमरे और 3 बड़े हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा सम्बन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें।

इस निर्माण कार्य पर 2,35,00,000 (दो करोड़ पैंतीस लाख) रूपये, और एक कमरे पर लगभग चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले ख़ैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा, हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे, ताकि दीनी तालिबे इल्म संतुष्ट होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें, हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुँचेगा।

मौ0 मुफ़्ती मु0 ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम, दारुलउलूम नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।	और इस पते पर भेजें।
NADWATUL ULAMA **A/C NO. 10863759733** **(State Bank of India Main Branch, Lucknow)**	**NAZIM NADWATUL ULAMA,** **P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,** **LUCKNOW-226007 (U.P.)**

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

अमेरिकी कैद में था लादेन- नेज़ाद

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेज़ाद ने कहा कि अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन मारे जाने से पहले कुछ समय तक अमेरिका की कैद में था। अहमदी नेज़ाद ने दावा किया कि उनके पास इस बात की पुख्ता जानकारी है। उन्होंने कहा कि ओसामा को मारे जाने के पीछे अमेरिका का राजनीतिक खेल है।

अहमदी नेज़ाद ने ईरान के सरकारी टीवी पर अपने संदेश में कहा कि अमेरिकी सैनिकों ने ओसामा बिन लादेन को कुछ समय तक कैद में रखा। उन्होंने लादेन को बीमार पड़ जाने दिया और जब वह बीमार हो गया तब उसे मार डाला। गौरतलब है कि अमेरिकी सैनिकों ने एक विशेष अभियान के तहत ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान के एबटाबाद जिले में दो मई को मार दिया था। ओसामा को मारे जाने के बाद पहली बार अहमदी नेज़ाद ने कोई सार्वजनिक बयान दिया है। यही नहीं ईरानी राष्ट्रपति ने अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा पर ओसामा की मौत पर राजनीति करने का आरोप भी लगाया। अहमदी नेज़ाद ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने जो कुछ किया वह घरेलू राजनीतिक लाभ कि लिए किया। उन्होंने आरोप लगाया कि ओबामा ने दोबारा राष्ट्रपति बनने के लिए ओसामा को मरवा दिया, ताकि ऐसा करके वह अमेरिकी जनता को लुभा सकें।

गौरतलब है कि ओसामा बिन लादेन के मारे जाने के बाद अमेरिका में राष्ट्रपति बराक ओबामा की लोकप्रियता काफी बढ़ गई है। माना जा रहा है कि आने वाले चुनाव में ओबामा को इसका लाभ मिलेगा।

मुसलमान भी सांप्रदायिक हिंसा बिल के खिलाफ़- सांप्रदायिक हिंसा बिल का सिर्फ भाजपा ही विरोध नहीं कर रही है बल्कि इसके कुछ प्रावधानों से मुस्लिम समुदाय भी सहमत नहीं है। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने बिल के अनेक प्रावधानों में संशोधन की मांग की है।

उन्होंने कहा है कि बिल में इस बात का कोई प्रावधान नहीं कि यदि हिंसा में स्थानीय प्रशासन या पुलिस शामिल है तो उसके खिलाफ कार्रवाई कैसे होगी। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के कानूनी सलाहकार तथा राम जन्म भूमि–बाबरी मस्जिद मुकदमें में बोर्ड के वकील जफरयाब जीलानी के अनुसार, बिल में हिंसा पर काबू करने के लिए बनाई जाने वाली नेशनल अथॉरिटी के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पर चुनाव लड़ने का पूर्ण प्रतिबंध होना चाहिए। उन पर राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति के चुनाव लड़ने पर भी रोक होनी चाहिए। प्रस्तावित कानून में 'नॉन स्टेट एक्टर' को भी पूरी तरह परिभाषित नहीं किया गया है। जीलानी ने कहा कि बिल में अधिकारियों को घरों तथा इमारतों की तलाशी की पूर्ण छूट दी गई है, जिसका दुरुपयोग होगा। इस बारे में सुप्रीम कोर्ट के दिशा–निर्देशों का पालन होना चाहिए। इसके अलावा 'नेशनल अथॉरिटी' को राज्य और केन्द्र सरकार की मंजूरी पर निर्भर नहीं बनाना चाहिए। उसे जांच की पूरी छूट होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को धारा 34 को और स्वतंत्र बनाना चाहिए। ❑❑

Phone: 0522-2267429 (S) 2260671 (R)

MOHD. MIYAN JEWELLERS

एक भरोसेमन्द सोने, चान्दी के ज़ेवरात की दुकान

1-2, Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

Phone: 9415087427

अनस मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हम से सम्पर्क करें

कपूर मार्केट (मलिक मार्केट) विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

Shop : 2266408
Residence: 2260884

IQBAL & CO.

Deals :
Friend Embroidery Machine
Deals in :
Embroidery Raw Materials & Spare Parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow-226063

HAJI SAFIULLAH & SONS

Jelwellers

Mohd. Aslam
Phone : 0522-4028050, 2268845
Mobile : 9454586265, 9839654567 9335913718

Nagina Market, Akbari Gate, Lucknow Opp. Gadbad Jhala, Aminabad, Lucknow